अप्रैल 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

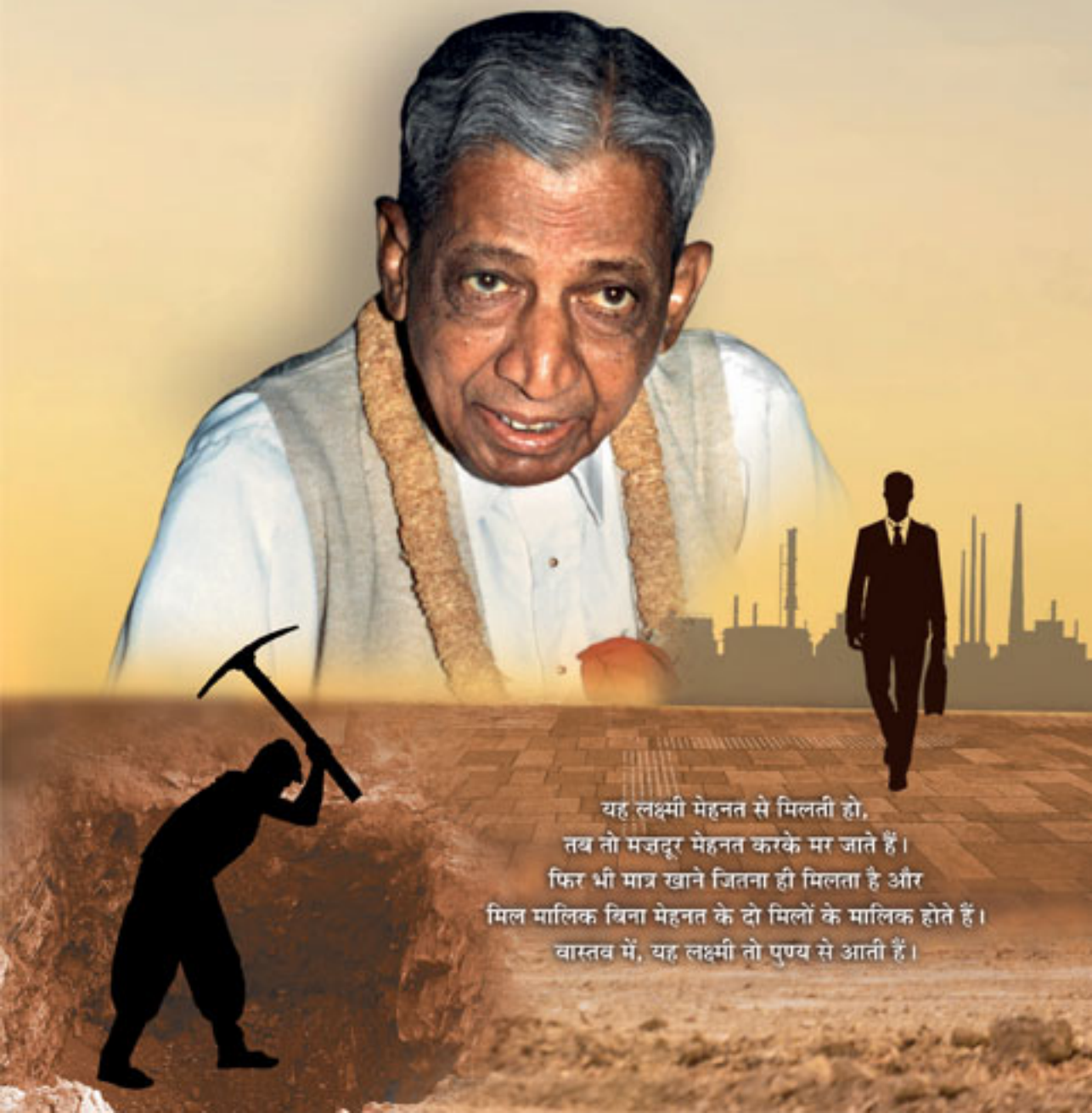

यह लक्ष्मी मेहनत से मिलती हो,
तब तो मजदूर मेहनत करके मर जाते हैं।
फिर भी मात्र खाने जितना ही मिलता है और
मिल मालिक बिना मेहनत के दो मिलों के मालिक होते हैं।
वास्तव में, यह लक्ष्मी तो पुण्य से आती हैं।

मेहसाणा : अविवाहित बहनों की शिविर : 24 से 27 फरवरी 2022

सत्संग

आबू - अंबाजी यात्रा : 28 फरवरी - 1 मार्च

दर्शन

गरबा

सत्संग

नक्की लेक में नौका विहार

मेहसाणा : अविवाहित भाईयों की शिविर : 2 से 6 मार्च

सत्संग

गरबा

वर्ष : 17 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 198
अप्रैल 2022
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 650 रुपये
यू.एस.ए. : 60 डॉलर
यू.के. : 45 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 10 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

लक्ष्मी, वह मेन प्रोडक्शन या बाइ प्रोडक्शन ?

संपादकीय

परम पूज्य दादाश्री ने अक्रम विज्ञान द्वारा निश्चय और व्यवहार दोनों के लिए सर्वोत्तम स्पष्टीकरण दिए हैं और इस काल में व्यवहार में यदि सब से विशेष प्राधान्य किसी को मिला हो तो वह है पैसे को। पैसे को ही ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है। पैसे को ही जगत् के लोगों ने सर्वस्व माना है। पैसे होंगे तो पूरी ज़िंदगी शांति से जी पाएँगे, पैसे होंगे तो सभी तरह से सलामती रहेगी और मेरे सर्व दु:खों का अंत आएगा। पैसे से ही खुद का मान-तान बना रहेगा, ऐसा मानकर लक्ष्मी इकट्ठी करने के पीछे रात-दिन भागदौड़ करते हैं।

व्यवहार जीवन में आजीविका के लिए लक्ष्मी अनिवार्य है, परंतु जब पैसे में ही रुचि, पैसे का ही लोभ यानी कि ज़रूरत से ज़्यादा जब पैसे के पीछे भागते हैं, तब यह जीवन किसलिए जीना है, वह भूल जाते हैं! क्या यह जीवन सिर्फ कमाने के लिए है?

पैसे से मिलने वाले बाह्य सुख के लिए मनुष्यों की भागदौड़ के पीछे लक्ष्मीजी का दोष नहीं है, मूल में खुद की सुख की मान्यता का दोष है। लेकिन क्या पैसा सच्चा सुख दे सकता है? प्रस्तुत अंक में दादाश्री, पैसे में लोकसंज्ञा से पड़ी हुई सुख की उल्टी मान्यता का छेदन करके ज्ञानी की संज्ञा अनुसार चलने के लिए विविध ज्ञान समझ का उद्बोधन कर रहे हैं, जैसे कि लक्ष्मी का आवन-जावन किस से? पैसे का संग्रह वह हिंसक भाव है, पैसे कमाने की भावना वही रौद्रध्यान है, पैसे से चढ़ता कैफ, पैसे में किफायत या लोभ, पैसे के लोभ से बिगड़ते अनंत जन्म, पैसे से मिलते लौकिक सुखों के बंधन और उससे आवरित होता अलौकिक सुख, चाहिए राजलक्ष्मी या मोक्षलक्ष्मी, प्रीति लक्ष्मीजी की या नारायण की? वास्तव में लक्ष्मी, वह मेन प्रोडक्ट है या बाइ प्रोडक्ट?

पैसे में सुख की मान्यता का छेदन करने के लिए दादाश्री कहते हैं, कि 'पैसे तो कुदरती रूप से आएँगे ही। उसके पीछे पड़ने की क्या ज़रूरत है? मैं तो इस पैसे के समुद्र में से तैरकर बाहर निकला हूँ। मैं जानता हूँ कि ज़्यादा पैसे जोखिमी हैं। क्योंकि ज़्यादा लक्ष्मी मनुष्य को मज़दूर बनाती है। यदि एक्सेस होगी तो अकुलाहट, *अजंपा* (बैचेनी, अशांति, घबराहट) चिंता, बैर बढ़ेंगे।'

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह मेन (मुख्य) प्रोडक्शन है और उसके कारण फिर संसार में लक्ष्मी का बाइ प्रोडक्शन तो अपने आप मुफ्त में आता है। लौकिक मान्यता की नासमझी से लोग पैसे के पीछे दौड़ते हैं, परंतु अंत में जब देह छोड़कर जाएँगे तब पैसे साथ नहीं आएँगे। अत: इस वीतराग विज्ञान की समझ से पैसे में सुख की मान्यता का छेदन हो जाए और अब बाकी का जीवन आत्मा के स्पष्टवेदन तक पहुँचने के पुरुषार्थ में ही जाए, यही हृदयपूर्वक की अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

लक्ष्मी, वह मेन प्रोडक्शन या बाइ प्रोडक्शन ?

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

लौकिक भाव से सुख की मान्यता

प्रश्नकर्ता : पैसों से ही सुख मिलता है, हम सब ऐसा क्यों मानते हैं?

दादाश्री : यह तो पूरे जगत् ने माना है। लौकिक भाव से है वह। लोगों के हिसाब से है वह। लौकिक तौर पर है। यदि पैसे से सुख मिलता हो तो सभी पैसे वाले सुखी ही होते, लेकिन कोई सुखी नहीं है।

'इससे सुख मिलेगा', यह है तो सुख है, वर्ना सुख नहीं है। वह उसका माना हुआ लौकिक सुख, लौकिक मान्यता। यानी लोभ की गांठ उगने लगती है। जमा किया हुआ काम आएगा न! बार-बार उधार लेने जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, ऐसा मानते हैं। इसलिए लोभ की गांठ बढ़ती है।

उस मान्यता से शुरु हुई मुसीबत

प्रश्नकर्ता : दादा, इस बार लोभ की गांठ किस कारण से मिली होगी? कौन से भाव किए थे?

दादाश्री : दूसरों का देखकर करता है कि इनके पास देखो न, धन जमा किया है इसीलिए अभी मिलें वगैरह चल रही हैं न! इसलिए फिर खुद भी धन जमा करता है। जमा करने से लोभ की गांठ उत्पन्न होती है। दूसरों का देखकर लोभ की गांठ उत्पन्न होती है।

उसने ऐसा माना है कि पैसे संग्रह करके रखूँगा तो मुझे सुख मिलेगा और फिर कभी भी दु:ख नहीं आएगा लेकिन ऐसे जमा करते-करते लोभी ही बन जाता है। खुद लोभी हो जाता है। किफायत करनी है, ईकोनॉमी करनी है, लेकिन लोभ नहीं करना है।

लोभ ज़्यादा हो तो संग्रह करता रहता है!

'संग्रह करना', वह है हिंसक भाव

लक्ष्मी का स्वभाव कैसा है कि जैसे-जैसे लक्ष्मी बढ़ती जाए, वैसे-वैसे 'परिग्रह' बढ़ता जाता है।

पैसे संग्रह नहीं करने चाहिए, परिग्रह करते हैं। पैसे संग्रह करना, वह हिंसा ही है। इसलिए दूसरों को दु:ख देता है।

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी का संग्रह करके रखते हैं, वह हिंसा कहलाएगी?

दादाश्री : हिंसा ही कहलाएगी। संग्रह करना, वह हिंसा है। दूसरे लोगों के काम नहीं आती न!

लोभ में भी हिंसक भाव रहा हुआ है। लोभ में हिंसक भाव ऐसे होता है कि आपके पास जो पैसे आते हैं, वे दूसरों के पास से कम होकर आते हैं न? क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सब हिंसक हैं। कपट किया, वह हिंसक भाव नहीं हैं? लेकिन ऐसा सब उस बेचारे का छीन लेने के लिए करते हो? वे सब हिंसक भाव हैं।

लोभ से यह जगत् खड़ा रहा है। आपको जलेबी भाती हो और आपको तीन दें और उसे चार दें तो आपको मन में दखल होगी! वह लोभ ही है! तीन साड़ियाँ हों और चौथी लेने जाती है!

ये कलियुग में पैसों का लोभ करके अपना जन्म बिगाड़ रहे हैं। मनुष्यपन में आर्तध्यान-रौद्रध्यान होता रहता है, जिससे मनुष्यत्व चला जाता है। बड़े-बड़े राजपाट भोग-भोगकर आए हुए हैं। ये कोई बिल्कुल भिखारी नहीं थे लेकिन अभी मन भिखारी जैसा हो गया है। इसलिए यह चाहिए और वह चाहिए, होता रहता है। वर्ना जिसका मन संतुष्ट हो चुका हो न, उसे कुछ भी न दें फिर भी राजश्री होता है। पैसा ऐसी चीज़ है जो मनुष्य की दृष्टि लोभ की ओर करवा देता है। लक्ष्मी तो बैर बढ़ाने वाली चीज़ है। उससे जितना दूर रह सकें उतना उत्तम और यदि खर्च हो तो अच्छे काम में खर्च हो जाए तो अच्छी बात है।

लक्ष्मीजी का आवन-जावन किससे?

प्रश्नकर्ता : पैसे विनाशी चीज़ हैं, इसके बावजूद उसके बगैर चलता नहीं है न? गाड़ी में बैठने से पहले पैसे चाहिए।

दादाश्री : जिस तरह लक्ष्मी के बिना नहीं चलता, उसी तरह लक्ष्मी मिलनी-नहीं मिलनी, वह खुद की सत्ता की बात नहीं है न! यह लक्ष्मी मेहनत से मिलती हो, तब तो मज़दूर मेहनत करके मर जाते हैं फिर भी मात्र खाने जितना ही मिलता है और मिल मालिक बिना मेहनत के दो मिलों के मालिक होते हैं।

ये लक्ष्मी जी कैसे आती हैं और कैसे जाती हैं, वह हम जानते हैं। लक्ष्मी जी मेहनत से नहीं आतीं या अक़्ल से या ट्रिक करने से भी नहीं आती हैं। लक्ष्मी कैसे कमाई जाती है? यदि सीधी तरह कमाई जा सकती तो अपने मंत्रियों को चार आने भी नहीं मिलते! यह लक्ष्मी तो पुण्य से कमाई जाती हैं। पागल हो तो भी पुण्य से कमाता रहता है।

'आवन-जावन', हिसाब के अनुसार ही

जिस तरह हाथ में मैल जमता रहता है, उसी तरह लक्ष्मी जी भी हर एक के हाथ में हिसाब के अनुसार आती ही रहती हैं। जो लोभांध हो जाता है उसकी सारी दिशाएँ बंद हो जाती हैं। उसे और कुछ भी नहीं दिखाई देता। एक सेठ का चित्त दिन भर धंधे में और पैसे कमाने में था और उसके घर के बेटे-बेटियाँ कॉलेज के बजाय कहीं और जाते थे। तो सेठ कहीं उन्हें देखने जाते थे? अरे, तुम कमाते रहते हो और इधर घर तो बिगड़ रहा है! हम तो साफ-साफ उसके हित की बात कह देते हैं।

लक्ष्मी तो हाथ का मैल है, वह तो नैचुरल आने वाला है। आपको इस साल पाँच हज़ार सात सौ पाँच रुपये और तीन आने जितना हिसाब में आना होगा न, वह हिसाब के बाहर कभी जाता नहीं है और फिर भी जो अधिक आता हुआ दिखाई देता है, वह तो बुलबुले के समान फूट भी जाता है। लेकिन जितना हिसाब है उतना ही रहेगा। आधी पतीली दूध हो और नीचे लकड़ी जलाकर, दूध की पतीली ऊपर रख दें तो दूध पूरी पतीली जितना हो जाएगा, उफनने से पूरी पतीली भर जाती है लेकिन क्या वह भरा हुआ टिकता है? वह उफना हुआ टिकता नहीं है। यानी जितना हिसाब होगा उतनी ही लक्ष्मी रहेगी। यानी

लक्ष्मी तो अपने आप आती ही रहती है। मैं 'ज्ञानी' हुआ हूँ तो हमें संसार संबंधी विचार ही नहीं आते, फिर भी लक्ष्मी आती रहती है न! आपके पास भी अपने आप आती है, लेकिन आप काम करने के लिए बाध्य हो। आपके लिए अनिवार्य क्या है? वर्क (काम) है।

इंजन पर पट्टा लगाकर काम निकाल लेना

दादाश्री : आप कौन सा व्यापार करते हो?

प्रश्नकर्ता : रेडीमेड कपड़ों की दुकान है।

दादाश्री : व्यापार किसलिए करते हो?

प्रश्नकर्ता : नफे के लिए ही करते हैं न?

दादाश्री : नफा किसलिए करते हो?

प्रश्नकर्ता : पेट के लिए।

दादाश्री : पेट का किसलिए करते हो?

प्रश्नकर्ता : वह नहीं पता।

दादाश्री : यानी पेट में पेट्रोल डालने के लिए ये सारी कमाई करते हैं। यह किसके जैसा है?

ये सब इंजन चल रहे होते हैं तब पेट्रोल डालते हैं और चलाते रहते हैं। पेट्रोल डालते हैं और चलाते रहते हैं। ऐसा सभी करते हैं। ऐसा आप भी करते हो? लेकिन इंजन किसलिए चालू रखना चाहिए, वह बताओ तो सही! उससे कुछ काम नहीं लेना है? ये इंजन तो सब लोगों ने चालू रखें हैं, लेकिन आपने किसलिए चालू रखा है? आपको सोचना तो चाहिए न कि भाई, इंजन में महँगे दाम का पेट्रोल डालकर, इंजन चालू रखना तो क्या यह सब लोगों के देखने के लिए है?

प्रश्नकर्ता : यह सब खुद का ही देखने के लिए है।

दादाश्री : इंजन पर पट्टा लगाकर उससे कुछ काम निकाल लेना होता है। यानी उस इंजन से तो काम निकाल लेते हैं लेकिन यहाँ किसलिए इंजन चलाते हो? आप तो सिर्फ चलाते ही रहते हो बस! शौच जाना और खाना, शौच जाना और खाना, शौच जाना और खाना, बस!

प्रश्नकर्ता : शरीर को तो खाने-पीने का चाहिए न?

दादाश्री : ऐसा? वह करोगे तभी खाना-पीना मिलेगा, वर्ना नहीं मिलेगा, है न? और खाना-पीना किसलिए?

प्रश्नकर्ता : शरीर टिकाये रखने के लिए।

दादाश्री : हाँ, लेकिन शरीर किसलिए टिकाये रखना है? कुछ हेतु तो होना चाहिए न? व्यापार करते हैं वह तो यह खाना खाने के लिए, मेन्टनन्स (निर्वाह) करने के लिए। मेन्टनन्स किसलिए कि शरीर टिकाने के लिए, तो शरीर टिकाने का हेतु क्या है?

प्रश्नकर्ता : पिछले कर्म पूरे करने के लिए है।

दादाश्री : उसके लिए? वह तो कुत्ते, गायें, भैंसें, सभी पूरा करते हैं। हिन्दुस्तान में मनुष्य जन्म मिला, यानी मोक्ष के हेतु के लिए है यह। हिन्दुस्तान में मनुष्य जन्म का हेतु मोक्ष है। और उसी के लिए अपना जीवन है। यह हेतु रखा हो तो फिर जितना मिला उतना सही। लेकिन हेतु तो होना चाहिए न? यह खाना-पीना सब उसी के लिए है। आपको समझ में आया न? जीवन किसलिए जीना है? क्या सिर्फ कमाने के लिए?

हर एक जीव सुख की तलाश में है। सर्व दुःखों से मुक्ति कैसे हो यह जानने के लिए ही जीवन जीना है। इसमें मोक्षमार्ग प्राप्त कर लेना है। यह सब मोक्षमार्ग के लिए ही है।

हाय पैसा! करते बेमौत मरते हैं

क्या आपको रात-दिन लक्ष्मी के सपने आते हैं?

प्रश्नकर्ता : सपने तो नहीं आते लेकिन उस सपने की इच्छा ज़रूर रखता हूँ।

दादाश्री : फिर तो कोई मुश्किल में हो और आपसे सौ रुपये माँगने आए, तब आपकी क्या दशा होगी? अरे बाप रे, कम हो जाएँगे तो? आपको ऐसा हो जाता है? कम करने के लिए ही तो हैं ये रुपये। ये कोई साथ नहीं ले जाने हैं। यदि साथ ले जाने होते न, तो ये बनिये लोग तो बहुत अक्लमंद हैं लेकिन अपनी जाति में पूछकर देख लो क्या कोई ले गया है? मुझे लगता है कि वे अंटी में बाँधकर ले जाते होंगे। यदि पैसे साथ ले जा सकते तब तो हम उसका ध्यान भी करते, लेकिन वे साथ नहीं ले जाने हैं न?

प्रश्नकर्ता : तो फिर मनुष्यमात्र की वृत्ति पैसे पाने की ओर क्यों रहती होगी?

दादाश्री : लोगों को देख-देखकर ऐसा करते रहते हैं। उसने ऐसा किया और मैं रह गया, उसे ऐसा लगता रहता है। इसके अलावा उसके मन में ऐसा है कि, 'पैसा होगा तो सब मिलेगा। पैसों से सब मिलता है।' लेकिन वह दूसरा नियम नहीं जानता कि पैसा किस आधार पर आता है। जैसे शरीर तंदुरस्त हो तब नींद आती है वैसे ही मन की तंदुरस्ती हो तो लक्ष्मी जी आती हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर भी अभी तो किसी को मोक्ष नहीं चाहिए, सिर्फ पैसे ही चाहिए।

दादाश्री : इसीलिए तो भगवान ने कहा है न, कि ये (मनुष्य) जानवर की मौत मरते हैं। जैसे कुत्ते, गधे, आदि जानवर मरते हैं न, वैसे ही ये मनुष्य मर जाते हैं, बेमौत मरते हैं। हाय पैसा, हाय पैसा! करते-करते मरते हैं!

कुछ साथ ले जाओगे?

बात तो समझनी पड़ेगी न? इस तरह कब तक गड़बड़ घोटाला चलेगा? और *उपाधि* (बाहर से आने वाला दुःख) तो पसंद नहीं है। यह मनुष्य देह *उपाधि* से मुक्त होने के लिए है। सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं है।

यह किसका मकान है? आपका खुद का है? इतना बड़ा मकान?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कितने लोग हो?

प्रश्नकर्ता : चार।

दादाश्री : इस सूने घर में अन्य तीन ही लोग हैं! दूसरी, तीसरी मंज़िल सब ऐसे ही हैं न? और शौचालय कितने हैं?

प्रश्नकर्ता : पाँच। शांति का स्थान वही है न?

दादाश्री : जो ज़रा वैराग्य आने का स्थान था, उसे इन लोगों ने वैराग्य उड़ जाए उसके लिए उपाय कर दिए। इस काल में वैराग्य आने का इतना ही स्थान था, तो उसे ऐसे ही उड़ा दिया। जहाँ वैराग्य आने की जगह थी वहीं लोग सिगरेट पीकर सोते हैं!

प्रश्नकर्ता : लोगों ने दो-दो लाख के आलीशान शौचालय बनवाए हैं!

दादाश्री : वह तो मैंने भी मुंबई में देखा है न! मुझे उन्हीं लोगों ने बताया था कि, 'दादा, यह ऐसा बनवाया है'। मैंने कहा, 'ठीक है, अब जो कर लिया वह कर लिया। अब छोड़ उसे। यह तो यहाँ के लिए किया। वहाँ ले जाने के लिए क्या किया? वह मुझे बता। यहाँ की सेफसाइड कर ली, लेकिन वहाँ ले जाने की?'

पुण्य, लेकिन पापानुबंधी

प्रश्नकर्ता : पैसे कहाँ से आते होंगे?

दादाश्री : पैसे तो पुण्यशालियों के पास सारे होते ही हैं न?

प्रश्नकर्ता : पैसे पुण्यशालियों के पास होते हैं, ऐसा कुछ नहीं है।

दादाश्री : तो फिर पापी के पास पैसे नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : आजकल तो पापी के पास ही पैसे हैं।

दादाश्री : पापी के पास नहीं हैं, मैं आपको ठीक से समझाता हूँ। आप एक बार मेरी बात समझ लो कि बिना पुण्य के तो रुपये हमारे पास आते ही नहीं हैं। काले बाज़ार का भी नहीं और सफेद बाज़ार का भी नहीं। पुण्य के बिना तो चोरी का भी पैसा हमें नहीं मिलता लेकिन वह पापानुबंधी पुण्य है। वह अंत में पाप में ही ले जाता है। वैसा पुण्य ही अधोगति में ले जाता है।

जब गलत पैसे आते हैं तब खराब विचार आते हैं कि किसका भोग लूँ, पूरे दिन मिलावट करने के विचार आते हैं, वह अधोगति में जाता है। पुण्य तो भोगता नहीं है बल्कि अधोगति में जाता है। उससे तो पुण्यानुबंधी पाप अच्छे हैं कि आज ज़रा सब्ज़ी लाने में दिक्कत होती है लेकिन दिनभर भगवान का नाम तो ले सकते हैं। और पुण्यानुबंधी पुण्य होता है तो वह पुण्य भी भोगता है और नया पुण्य भी उत्पन्न होता है।

नहीं मिलता सुख, पुण्य के बगैर

प्रश्नकर्ता : भौतिक सुख मिलते हैं, उन्होंने किस प्रकार के कर्म किए हों तो वे मिलते हैं?

दादाश्री : यदि कोई दुःखी होता हो, उसे सुख दें, उससे पुण्य बँधता है और परिणाम स्वरूप वैसा सुख हमें भी मिलता है। किसीको दुःख दो, तो आपको दुःख मिलता है। आपको पसंद आए वह देना।

दो प्रकार के पुण्य हैं। एक पुण्य से भौतिक सुख मिलते हैं और दूसरा एक ऐसे प्रकार का पुण्य है कि जो हमें 'सच्ची आज़ादी' (मुक्ति) प्राप्त करवाता है।

मरने के बाद भी चलेगा...

घर में सुख होता तो कोई भी व्यक्ति मोक्ष ढूँढता ही नहीं न! यह तो संसार है इसलिए ऐसा ही होता है लेकिन दोनों टाइम खाना तो मिलता है न! पहनने को कमीज़ मिलती है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन पैसों का सुख नहीं है।

दादाश्री : हमें खाना तो मिलता है न। मुंबई में तो सब पैसों के लिए दौड़ते हैं। सब को धन की इच्छा है न! हमें संतोष रखना है। हमारा हिसाब होगा तो मिलेगा। जो हिसाब लेकर आया है, तो हिसाब से ज़्यादा तो तुरंत मिल नहीं सकता न? कितना धन इकट्ठा करना है?

प्रश्नकर्ता : ज़िंदगी के अंत तक इकट्ठा करना है।

दादाश्री : पर फिर साथ में कुछ भी लेकर नहीं जाना है, तो ऐसी दौड़-भाग कौन करेगा?

प्रश्नकर्ता : जब आए थे, क्या तब साथ में लेकर आए थे?

दादाश्री : बस, साथ लेकर आना नहीं है और साथ लेकर जाना नहीं है। नियम अच्छा है, वर्ना ये रात को भी न सोएँ। रात को भी दुकानें खुली होतीं और रात भर बिजली खर्च होती।

ये दो बातें यदि समझ लें न, तो कोई *उपाधि* नहीं रहे!

'जन्म से पहले चलता था और मरने के बाद भी चलेगा;
रुका नहीं किसी दिन व्यवहार रे...
सापेक्ष संसार रे...'

'जन्म से पहले झूला और मरने के बाद लकड़ी;
सगे-संबंधी रखेंगे तैयार रे...
बीच में गाढ़ जंजाल रे...'

सभी बुद्धिजीवियों को यह एक्सेप्ट (स्वीकार) करना पड़ेगा, ऐसी बात है न!

ज़िंदगी की ज़रूरतों का स्तर क्या?

ये तो चिंता करते हैं, वह भी पड़ोसियों का देखकर। पड़ोसी के घर में गाड़ी है और अपने घर में नहीं! अरे, जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए? तुम एक बार तय कर लो कि, 'इतनी-इतनी मेरी ज़रूरतें हैं।' उ.तौ. पर घर में खाने-पीने का पर्याप्त होना चाहिए, रहने के लिए घर चाहिए। घर चल सके उतनी लक्ष्मी चाहिए। उतना तो आपको मिल ही जाएगा। लेकिन पड़ोसी ने बैंक में दस हज़ार रखे हों, तो आपको अंदर चुभता रहता है। इसी से तो दुःख खड़े होते हैं। दुःख को तो खुद ही आमंत्रण देते हैं। एक ज़मींदार मेरे पास आए मुझसे पूछने लगे कि 'जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए? मेरे पास हज़ार बीघा जमीन है, बंगला है, दो मोटर कार हैं और अच्छा बैंक बैलेन्स भी है। तो मुझे कितना रखना चाहिए?' तब मैंने कहा, 'देखो भाई, हर एक की ज़रूरतें कितनी होनी चाहिए इसका हिसाब उसके जन्म के समय कितना वैभव था, उस आधार पर सारी ज़िंदगी का स्तर आप तय करो। यही दरअसल नियम है। ये सब तो एक्सेस (अधिक) में जाता है और एक्सेस तो ज़हर है, मर जाओगे!'

लक्ष्मी भी याद किए बिना आती है

एक भाई यहाँ आए थे। उन बेचारे को व्यापार में हर महीने नुकसान हो रहा था, तो पैसों के लिए बेचैन रहते थे। मैंने उनसे कहा, 'पैसों की बात क्यों करते हो? पैसों को याद करना बंद कर दो।' और तब से उनके पैसे बढ़ने लगे। फिर हर महीने तीस हज़ार रुपयों का मुनाफ़ा होने लगा। वर्ना पहले तो बीस हज़ार रुपयों का नुकसान होता था। पैसों को तो याद करना चाहिए? लक्ष्मी जी तो भगवान की पत्नी कहलाती हैं। क्या उनका नाम लेना चाहिए?

पैसों के अंतराय कब तक होते हैं? जब तक कमाने की इच्छा हो, तब तक। पैसों की ओर से लक्ष्य हटे तो वह ढेर सारे आएँगे।

खाने की ज़रूरत नहीं है? संडास जाने की ज़रूरत नहीं है? वैसे ही लक्ष्मी की भी ज़रूरत है। जैसे संडास याद किए बिना आती है वैसे ही लक्ष्मी भी याद किए बिना आ जाती हैं।

ज़रूरत किसकी है?

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी नहीं होगी तो साधन नहीं होंगे और साधन के लिए लक्ष्मी की ज़रूरत है। अत: लक्ष्मी के साधन के बिना हम जो ज्ञान लेना चाहते हैं, तो वह कब मिलेगा? अत: यह लक्ष्मी ज्ञान की शाला में जाने का पहला साधन है, ऐसा नहीं लगता?

दादाश्री : नहीं, लक्ष्मी बिल्कुल भी साधन नहीं है। ज्ञान के लिए तो नहीं, लेकिन वह किसी भी प्रकार से बिल्कुल भी साधन नहीं है। इस दुनिया में कोई गैरज़रूरी चीज़ हो तो वह लक्ष्मी है। जो ज़रूरत महसूस होती है, वह तो भ्रांति और नासमझी से मान बैठे हैं। ज़रूरत किसकी है? सबसे पहले हवा की ज़रूरत है। यदि हवा नहीं होगी तो तू कहेगा कि नहीं, हवा की ज़रूरत है, क्योंकि हवा के बिना मर जाते हैं। लक्ष्मी के बगैर मरने वाले नहीं देखे गए। यानी यह लक्ष्मी ज़रूरी साधन है, ऐसा जो कहते हैं, वह तो सारी मेडनेस (पागलपन) है। क्योंकि दो मिल वाले को भी लक्ष्मी चाहिए, एक मिल वाले को भी लक्ष्मी चाहिए, मिल के सेक्रेटरी को भी लक्ष्मी चाहिए, मिल के मज़दूर को भी लक्ष्मी चाहिए। तो फिर सुखी कौन है इसमें? ये तो विधवा भी रोती है और सुहागन भी रोती है और सात पतियों वाली भी रोती है। यह विधवा रोए, तो हम समझ सकते हैं कि उस स्त्री का पति मर गया है, लेकिन यह सुहागन, 'तू किसलिए रो रही है?' तब वह कहेगी, 'मेरा पति नालायक है।' और सात पतियों वाली तो चेहरा ही नहीं दिखाती! ऐसा ये लक्ष्मी का मामला हैं। तो फिर क्यों इस लक्ष्मी के पीछे पड़े हो? ऐसे कहाँ फँसे आप?

ज़्यादा लक्ष्मी मनुष्य को मज़दूर बनाती है

लक्ष्मी मनुष्य को मज़दूर बनाती है। यदि लक्ष्मी ज़रूरत से ज़्यादा आ जाए, तब फिर मनुष्य मज़दूर जैसा हो जाता है। इनके पास लक्ष्मी अधिक है पर साथ-साथ वे दानेश्वर हैं, इसलिए अच्छा है। नहीं तो मज़दूर ही कहलाएँगे न! और पूरा दिन कड़ी मज़दूरी करता ही रहता है। उसे पत्नी की नहीं पड़ी होती, बच्चों की नहीं पड़ी होती, किसी की भी नहीं पड़ी होती है, सिर्फ लक्ष्मी की ही पड़ी होती है। इसलिए लक्ष्मी मनुष्य को धीरे-धीरे मज़दूर बना देती है और फिर उसे तिर्यंच गति में ले जाती है। क्योंकि पापानुबंधी पुण्य है न! पुण्यानुबंधी पुण्य हो तब तो हर्ज नहीं है। पुण्यानुबंधी पुण्य किसे कहते हैं कि पूरे दिन में आधा घंटा ही मेहनत करनी पड़े। वह आधा घंटा मेहनत करे तो भी सारा काम सरलता से धीरे-धीरे चलता रहता है।

यह जगत् तो ऐसा है। उसमें भोगने वाले भी होते हैं और मेहनत करने वाले भी होते हैं, सब मिलाजुला होता है। मेहनत करने वाले ऐसा समझते हैं कि 'यह मैं कर रहा हूँ।' उसका उनमें अहंकार होता है। जब कि भोगने वाले में ऐसा अहंकार नहीं होता। तब उन्हें भोक्तापन का रस मिलता है। उस मेहनत करने वाले को अहंकार का गर्वरस मिलता है।

एक सेठ मुझे कहते हैं, 'मेरे बेटे को कुछ कहिए न! उसे मेहनत नहीं करनी है, चैन से भोगता है।' मैंने कहा, 'कुछ कहने जैसा ही नहीं है। वह उसके खुद के हिस्से का पुण्य भोग रहा है, उसमें हम किसलिए दख़ल करें?' तब वह मुझे कहते हैं कि, 'उसे सयाना नहीं बनाना है?' मैंने कहा, जगत् में जो भोगता है, वह सयाना

कहलाता है। बाहर डाल दे वह पागल कहलाता है और मेहनत करता रहे वह मज़दूर कहलाता है। परन्तु मेहनत करता है उसे अहंकार का रस मिलता है न! लंबा कोट पहनकर जाता है इसलिए लोग 'सेठजी आए, सेठजी आए' करते हैं, इतना ही बस और भोगने वाले को ऐसी कोई सेठ-वेठ की पड़ी नहीं होती। हमने तो अपना भोगा उतना सही।

अभी जो है, वह तो लक्ष्मी ही नहीं कहलाती। यह तो पापानुबंधी पुण्य वाली लक्ष्मी है! वे पुण्य ऐसे बाँधे थे कि अज्ञान तप किए थे, उसका पुण्य बँधा हुआ है। उसका फल आया है, उसमें लक्ष्मी आई। यह लक्ष्मी व्यक्ति को पागल-बावरा बना देती है। इसे सुख कैसे कहा जाए? सुख तो, पैसे का विचार ही नहीं आए, वह सुख कहलाता है। हमें तो वर्ष में एकाध बार विचार आता है कि जेब में पैसे हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बोझ जैसा लगता है?

दादाश्री : नहीं, बोझ तो हमें होता ही नहीं। पर हमें वह विचार ही नहीं होता न! किसलिए विचार करें? सब आगे-पीछे तैयार ही होता है। जैसे खाने-पीने का आपके टेबल पर आता है या नहीं आता?

पैसों के लिए सोचना, वह बुरी आदत

पैसों के लिए सोचना यह एक बुरी आदत है। वह कैसी बुरी आदत है कि यदि एक व्यक्ति को बहुत तेज़ बुखार आया हो तो आप उसे भाप देकर उसका बुखार उतारते हैं। भाप देने से उसे बहुत ज़्यादा पसीना आ जाता है। इस तरह फिर रोज़ भाप देकर पसीना निकालते रहें तो उसकी क्या दशा होगी? वह समझता है कि इस तरह एक दिन मुझे बहुत फायदा हुआ था, मेरा शरीर हल्का हो गया था तो अब यह रोज़ की आदत बना लेनी है। रोज़ भाप ले और पसीना निकालते रहे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : शरीर में से पूरा पानी निकल जाएगा।

दादाश्री : फिर वह लकड़ी जैसा हो जाएगा। इस प्याज़ को जिस तरह सुखाते हैं न? इसी तरह, लक्ष्मी का चिंतवन करना भी उसके जैसा ही है। जैसे यह पसीना प्रमाण में ही निकलता है, उसी तरह लक्ष्मी भी प्रमाण के अनुसार आती रहती है। आपको तो अपना काम करते रहना है। काम में लापरवाह नहीं रहना है। लक्ष्मी तो आती ही रहेगी। लक्ष्मी के बारे में सोचना नहीं है कि, 'इतनी आना और उतनी आना' या 'आए तो अच्छा', ऐसा मत सोचना। उससे तो लक्ष्मी जी को बहुत चिढ़ चढ़ती हैं। मुझे लक्ष्मी जी रोज़ मिलती हैं तब मैं उनसे पूछता हूँ कि 'आप क्यों रूठी हो?' तब लक्ष्मी जी कहती हैं कि 'अब ये लोग ऐसे हो गए हैं कि, आपको मेरे यहाँ से जाना नहीं है, ऐसा कहते हैं।' तो क्या, लक्ष्मी जी अपने मायके न जाएँ? क्या लक्ष्मी जी को घर में रोककर रखना चाहिए?

शमशान में पैसे ढूँढने चाहिए?

लोग पैसों के पीछे ही पड़े हैं कि कहाँ से पैसे पाएँ? अरे, ये शमशान में कौन से पैसे ढूँढते हो? यह तो शमशान बन गया है। प्रेम जैसा तो कुछ दिखता ही नहीं है। खाने-पीने में चित्त का कोई ठिकाना नहीं है, कपड़े पहनने का कुछ ठिकाना नहीं है, गहने पहनने का ठिकाना नहीं है, किसी में बरकत नहीं रही। यह किस प्रकार का है! ऐसा कब तक चलेगा? ये किस तरह के जीव पैदा हुए हैं वही समझ में नहीं आता! दिन भर पैसे, पैसे और बस, पैसे के पीछे ही!

पैसा तो जितना आना होगा उतना ही आएगा। धर्म में रहेगा तब भी उतना आएगा और अधर्म में रहेगा तब भी उतना ही आएगा। लेकिन यदि अधर्म में पड़ेगा तो दुरुपयोग होगा और दुःखी होगा और धर्म में सदुपयोग होगा तो सुखी होगा और मोक्ष में जा सकेगा वह अलग। बाकी, पैसा तो उतना ही आना है।

पैसा 'व्यवस्थित' के अधीन है। चाहे धर्म में रहो या अधर्म में, फिर भी पैसा तो आता ही रहेगा।

पैसा कुदरती तौर पर मिलना है। उसका रास्ता कुदरती तरीके से है। साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स है, हमें उसके पीछे पड़ने की क्या ज़रूरत है? वही हमें मुक्त करे तो बहुत अच्छा है न!

यह तो सेठ सारे दिन लक्ष्मी के और सिर्फ लक्ष्मी के विचारों में ही घूमता रहता है! इसलिए मुझे सेठ से कहना पड़ता है कि, 'सेठ, आप लक्ष्मी के पीछे पड़े हो? घर पूरा तहस-नहस हो गया है।' बेटियाँ मोटर लेकर इधर जाती हैं, बेटे उधर जाते हैं और सेठानी इस तरफ जाती है। 'सेठ, आप तो हर तरह से लुट गए हो!' तब सेठ ने पूछा, 'मुझे करना क्या है?' मैंने कहा, 'बात को समझो न! किस तरह जीवन जीना है यह समझो। सिर्फ पैसों के ही पीछे मत पड़ो। शरीर का ध्यान रखते रहो, नहीं तो हार्ट फेल होगा।' शरीर का ध्यान, पैसों का ध्यान, बेटियों के संस्कार का ध्यान, सब कोने बुहारने हैं। एक कोना आप बुहारते रहते हो! अब बंगले में एक ही कोना बुहारते रहें और दूसरे सब तरफ कचरा पड़ा हो तो कैसा लगेगा? सभी कोने बुहारने हैं। इस तरह तो जीवन कैसे जी पाएँगे?

कमाने की भावना, वह रौद्रध्यान

पैसे कमाने की भावना का मतलब ही रौद्रध्यान। पैसे कमाने की भावना यानी दूसरों के पैसे कम करने की भावना ही न? इसलिए भगवान ने कहा है कि, 'कमाने की तू भावना ही मत करना।' तू रोज़ नहाने के लिए ध्यान करता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं साहब।

दादाश्री : नहाने का ध्यान नहीं करता तब भी पानी की बाल्टी मिलती है या नहीं मिलती?

प्रश्नकर्ता : मिलती है।

दादाश्री : जैसे नहाने के लिए पानी की बाल्टी मिल जाती है वैसे ही ज़रूरत के अनुसार पैसे हर एक को मिल जाते हैं, ऐसा नियम ही है। लेकिन यहाँ पर (पैसे के लिए) बेकार ही ध्यान करता है।

सारा दिन बिस्तर का हिसाब लगाते रहते हो कि रात को बिस्तर बिछाने को मिलेगा या नहीं मिलेगा? यह तो शाम हो और सुबह हो, लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी! अरे, कौन गुरु मिले तुझे? कौन ऐसा मूर्ख गुरु मिला कि जिसने तुझे सिर्फ लक्ष्मी के पीछे ही लगाया! घर के संस्कार लुट गए, स्वास्थ्य लुट गया, ब्लड प्रेशर हो गया। हार्ट फेल की तैयारियाँ चल रही हैं! तुझे कौन ऐसे गुरु मिले कि सिर्फ लक्ष्मी के-पैसों के पीछे पड़, ऐसा सिखलाया?

इन्हें कोई गुरु नहीं मिले तो लोकसंज्ञा, वही उनकी गुरु कहलाती है। लोकसंज्ञा मतलब लोगों ने पैसों में सुख माना, तो हमने भी उसी में सुख माना, वह लोकसंज्ञा।

वह लोकसंज्ञा कब उत्पन्न होती है? जब

खुद को भीतर संतोष न हो तब। मुझे अभी तक, कोई सुख दे सके, ऐसा मिला ही नहीं है! बचपन से ही मुझे रेडियो तक लाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। ये सब जीते-जागते रेडियो ही घूम रहे हैं न! जब भीतर में लोभ पड़ा हो तब लोकसंज्ञा मिल जाती है।

लोकसंज्ञा से यह रोग दाखिल हो गया तब कौन सी संज्ञा से यह रोग निकलेगा? तब भगवान कहते हैं कि, 'ज्ञानी की संज्ञा से यह रोग निकलेगा। लोकसंज्ञा से दाखिल हुआ रोग ज्ञानी की संज्ञा से निकल जाता है।'

यानी कि हम कहना चाहते हैं कि यह नहाने के पानी के लिए या रात को सोने के बिस्तर के लिए या दूसरी कितनी ही चीज़ों के लिए आप सोचते तक नहीं फिर भी, क्या वे आपको नहीं मिलतीं? वैसे ही लक्ष्मी के लिए भी सहज रहना चाहिए।

वे आती हैं या लानी पड़ती हैं?

पैसे जमा करने की इच्छा है लेकिन पैसे कैसे आते हैं वह पता नहीं है। एक व्यक्ति ने पूछा 'दादा, लक्ष्मी कैसे आती है?' मैंने कहा, 'जैसे नींद आती है वैसे।' हाँ, कितने ही लोगों को तो नींद बिल्कुल ही नहीं आती है न? तो वैसे ही, वहाँ रुपये भी नहीं दिखते। रुपये और नींद, ये दोनों सिमिली (उपमा) हैं। जैसे नींद आती है न, उसी तरह लक्ष्मी आती है। नींद लाने के लिए आपको कुछ करना नहीं पड़ता और यदि प्रयत्न करोगे तो और भी दूर जाएगी। नींद लाने के लिए प्रयत्न करोगे तो दूर जाएगी। आज करके देख लेना न!

मुंबई शहर में सब दु:खी हैं। क्योंकि जो पाँच लाख पाने की पात्रता रखते हैं, वे करोड़ का ठप्पा लगाकर बैठे हैं और जो हज़ार पाने की पात्रता रखते हैं, वे लाख का ठप्पा लगाकर बैठे हैं।

चाहिए राजलक्ष्मी या मोक्षलक्ष्मी?

भगवान ने क्या कहा है, कि 'यह राजलक्ष्मी मुझे सपने में भी नहीं चाहिए।' क्योंकि राज जैसी संपत्ति होगी और उसके मालिक बनने जाएँ तो फिर मोक्ष में कैसे जाएँगे? इसलिए वह संपत्ति तो सपने में भी नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में क्यों नहीं जाने देती है?

दादाश्री : मोक्ष में कैसे जाने देगी? ये चक्रवर्ती राजा, सारा चक्रवर्ती राज्य छोड़कर चले जाते थे, तब मोक्ष में जाते थे। वर्ना चित्त तो उन सब में लगा रहता है। क्या उस समय अक्रम विज्ञान था? क्रमिक मार्ग था। यह तो अक्रम विज्ञान है। इसलिए आराम से ज्ञान का उपयोग करके सो जाते हैं फिर पूरी रात अंदर समाधि रहती है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था न कि अच्छे कुटुंब में जन्म लिया हो तो सब लेकर ही आए होते हैं इसलिए ज़्यादा माथापच्ची करना रहा ही नहीं, ऐसा है न?

दादाश्री : हाँ, सब लेकर ही आते हैं लेकिन सिर्फ व्यवहार चले उतना ही, खुद का सब ठीक से चल सके इतना ही। जबकि करोड़पति तो कुछ ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : चक्रवर्ती राजा भी तो अंत में मोक्ष जाने को ही ज़्यादा इम्पॉरटेन्ट (महत्वपूर्ण) समझते थे न! महत्वपूर्ण तो मोक्ष ही है। चक्रवर्ती बनने में सुख नहीं है न?

दादाश्री : महत्वपूर्ण मोक्ष है, ऐसा नहीं, वह चक्रवर्ती पद उन्हें इतना अधिक चुभता था कि मन में ऐसा होता था कि अब कहीं भाग जाऊँ। इसलिए मोक्ष याद आता था। कितने अधिक पुण्यशाली हों तब चक्रवर्ती बनते हैं लेकिन भाव तो मोक्ष में जाऊँ, ऐसा ही रहता है। लेकिन सारा पुण्य तो भोगना ही पड़ेगा न!

पैसे संभालना महा मुश्किल

प्रश्नकर्ता : लोगों का पुण्य होगा तभी उन्हें यह संपत्ति मिली है। यह पुण्य फिर ऐसा बढ़ा कि उन लोगों का सारा उपयोग अब इस तरफ का रहने लगा है।

दादाश्री : वह सारा पुण्य और ज़बरदस्त पुण्य है न! लेकिन संभालना मुश्किल हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए यह ठीक है। परेशानी तो है ही न! बाद में वहीं से शुरुआत होती है।

दादाश्री : न हो, उसके जैसा तो कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्या पैसे न हो, संपत्ति न हो, तो उसके जैसा कुछ भी नहीं है?

दादाश्री : हाँ, उसके जैसा कुछ भी नहीं है। संपत्ति तो परेशानी है। संपत्ति यदि इस ओर, धर्म में ही लग गई हो, तब कोई हर्ज नहीं है। वर्ना परेशानी बन जाती है। किसे देनी है? अब कहाँ रखनी है? ऐसी सारी परेशानी हो जाती है!

प्रश्नकर्ता : हाँ, वैसी परेशानी है! जिनके पास बहुत जमा हो गया है, उन्हें तो हमेशा परेशानी!

दादाश्री : बहुत मुश्किलें हैं! इसके बजाय तो कम कमाना ही अच्छा। यहाँ बारह महीनों में दस हज़ार कमाए और एक हज़ार भगवान के वहाँ रख दे, तो उसे कोई परेशानी नहीं है। वह लाखों दें और यह हज़ार दें, दोनों बराबर हैं लेकिन हज़ार ही दे पाएँ तब भी देना चाहिए। मेरा क्या कहना है कि खाली हाथ नहीं रहना, कम हो फिर भी उसमें से कुछ तो देना ही। ज़्यादा हो और वह इस तरफ धर्म में लग गया, तब फिर अपनी जोखिमदारी नहीं है। वर्ना जोखिम है। बहुत दु:खदायी है वह तो। पैसे संभालना तो बहुत मुश्किल है! गायों-भैंसों को संभालना अच्छा है। खूँटे से बाँध दिया हो तो सुबह तक चली तो नहीं जातीं। लेकिन पैसे संभालना तो बहुत मुश्किल है! मुश्किल, परेशानी है सारी!

वह तो तुम्हारे लिए अच्छा था कि तुम्हारे पैसे कहीं दिखते नहीं थे। वर्ना पैसे दबा लिए जाते। मेरे तो बहुत सारे दबा लिए गए थे। मैं तो मुक्त हो चुका हूँ, निश्चिंत हो गया हूँ। हमारा तो याद करना ही बंद हो गया न! मेरे जैसे को कोई देता भी नहीं न!

हमारा दयालु, प्रेम वाला स्वभाव! वसूली करने गए हों तो बल्कि और देकर आते थे! वैसे तो कभी वसूली करने जाते ही नहीं थे। यदि कभी वसूली करने जाते और उन्हें तंगी होती तो बल्कि देकर आते थे। मेरी जेब में अगले दिन खर्च करने के जो पैसे होते, वे भी दे आते थे! फिर हम अगले दिन खर्च के लिए उलझन में पड़ जाते थे! इस तरह मेरा जीवन बीता है।

साधन बंधन बन गए हैं

अहमदाबाद के सेठों की दो मिले हैं, फिर भी उनकी बेचैनी का तो यहाँ पर वर्णन नहीं किया जा सकता, ऐसा है। दो-दो मिले हैं, फिर

भी वे कब फेल हो जाए, वह कहा नहीं जा सकता। यों तो स्कूल में अच्छी तरह पास होते थे, लेकिन यहाँ पर कब फेल हो जाएँ, वह कहा नहीं जा सकता। क्योंकि उसने 'बेस्ट फूलिशनेस' शुरू कर दी है। 'डिस्ओनेस्टी इज़ द बेस्ट फूलिशनेस।' इस फूलिशनेस की तो हद होगी न? कि 'बेस्ट' तक पहुँचना है? तो आज बेस्ट फूलिशनेस तक पहुँच गए! और अपने यहाँ बड़े-बड़े बंगले होते हैं न, उन बंगलों में हम सफाई देखते हैं न? उसी तरह के ये बड़े-बड़े मकान होते हैं। वे कितनी ही मंजिल के, तो जैसे-जैसे मंजिल बढ़ाई, वैसे-वैसे सफाई बढ़ती है। और जितनी सफाई बढ़ती है, उतनी ही जलन बढ़ती है। फिर उस जलन के उपाय में ब्रांडी (शराब) और दूसरे सभी उपाय करता है। तो क्या सफाई एडमिट नहीं करनी चाहिए? नहीं, सफाई एडमिट इतनी ही करनी अच्छी कि जो यदि मैली हो जाए, फिर भी हमें चिंता नहीं हो। बच्चा उस सफाई को बिगाड़ दे, तब भी उस बच्चे पर गुस्सा नहीं होना पड़े। यह तो कहेगा कि, 'यह पुराना सोफासेट बदल डालें?' तब मैंने कहा कि, 'नहीं, उसे रहने दो न!' क्योंकि छोटा बच्चा उस पर ब्लेड से चीरा लगा देगा तो भी आपको परेशानी नहीं होगी। बल्कि उसे कहना, 'ले दूसरा चीरा लगा।' इससे आपको निर्भयता रहेगी। हमें साधन ऐसे रखने चाहिए कि जो साधन हमें भय नहीं करवाएँ, नहीं तो फिर कृपालुदेव ने गाया है, वैसा होगा कि,

'सहु साधन बंधन थया रह्यो न कोई उपाय,
सत् साधन समज्यो नहीं त्यां बंधन शुं जाय?'

यानी ये साधन ही बंधन बन गए हैं। इसके बावजूद कुछ साधन ऐसे होते हैं कि जो आवश्यक हैं। उन साधनों को हटाना नहीं क्योंकि वे अवश्य होने ही चाहिए, लेकिन उनकी मात्रा हमें समझ लेनी चाहिए। बंगला कितना बड़ा बनवाना चाहिए, उसकी कोई लिमिट तो होगी या नहीं होगी? अपने पास पाँच अरब रुपये हैं लेकिन बंगला कितना बड़ा बनाना चाहिए, उसकी लिमिट होनी चाहिए या अनलिमिटेड होना चाहिए? किसी का अन्लिमिटेड बंगला देखा है आपने? नहीं। होगा, किसी का तो होगा न? अन्लिमिटेड किसी का होता नहीं है न! होटल भी अन्लिमिटेड नहीं होती, उसकी भी लिमिट रखी होती है, लेकिन बंगले लिमिटेड नहीं बनते। मेरा कहना है कि इसमें क्यों अन्लिमिटेड होते हो? क्योंकि वही फिर खुद के लिए परेशानी बन जाएगी, बच्चे ने थोड़ा भी बिगाड़ा कि उस पर चिढ़ता रहेगा और बच्चे को मारता रहेगा!

टेम्परेरी जगत् में आनंद लेने जैसा नहीं है

पैसे हों तब भी दुःख और पैसे ना हों तब भी दुःख, बड़े प्रधान बन जाए तब भी दुःख, गरीब हो तब भी दुःख। भिखारी हो तब भी दुःख, विधवा को दुःख, सधवा (सुहागन) को दुःख, सात पति वाली को भी दुःख। दुःख, दुःख और दुःख। अहमदाबाद के सेठों को भी दुःख। इसका क्या कारण होगा?

प्रश्नकर्ता : उसे संतोष नहीं है।

दादाश्री : उसमें सुख था ही कब? इसमें सुख था ही नहीं। यह तो भ्रांति से लगता है। जैसे शराब पीया हुआ व्यक्ति हो, उसका एक हाथ गटर में पड़ा हो तो कहता है, 'हाँ, अंदर ठंडक लग रही है। बहुत अच्छा है।' वह शराब के कारण लगता है। बाकी, उसमें सुख होता ही कहाँ है? यह सब तो सिर्फ जूठन ही है!

इस संसार में सुख है ही नहीं। सुख हो ही नहीं सकता। यदि सुख होता तब तो मुंबई ऐसा नहीं होता। सुख है ही नहीं। यह तो भ्रांति का सुख है और वह सिर्फ टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है।

धन का बोझ रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तो आनंद होता है और जाए तो दुःख होता है। इस जगत् में कुछ भी आनंद लेने जैसा नहीं है, क्योंकि टेम्परेरी है।

पैसे जाएँ तब कौन सा पुरुषार्थ?

पूरी दुनिया के लोग सारी ज़िंदगी पैसों के पीछे पड़े हैं! कोई पैसों से संतुष्ट हुआ हो, ऐसा मैंने नहीं देखा है। तो वह सब गया कहाँ?

इसलिए सभी का सबकुछ जैसे-तैसे करके चलता है। धर्म का तो एक अक्षर भी नहीं समझते और सब चलता रहता है। इसलिए जब मुश्किलें आती हैं तब क्या करना चाहिए वह उन्हें नहीं आता। पैसे आने लगें तब उछल-कूद करते हैं लेकिन फिर मुश्किलें आएँ तब उनका कैसे *निकाल* (निपटारा) करना चाहिए वह नहीं आता तब सिर्फ पाप ही बाँध लेते हैं। ऐसे समय में पाप न बंधे और समय व्यतीत कर ले, ऐसी समझ हो, उसे ही धर्म कहते हैं।

संसार का नियम ऐसा है कि हमेशा सनराइज (सूर्योदय) और सनसेट (सूर्यास्त) होगा ही। कर्म के उदय से अपने आप पैसे बढ़ते ही जाते हैं। हर तरह से, गाड़ियाँ-वाड़ियाँ, मकान सब बढ़ता रहता है लेकिन जब चेन्ज होता है तब बिखरता जाता है। पहले जमा होता रहता है, फिर बिखरता रहता है। बिखरते समय शांति रखना, वही सब से बड़ा पुरुषार्थ है! वहाँ जीवन कैसे जीना चाहिए, वह पुरुषार्थ है।

कोई नौकर ऑफिस से दस हज़ार का सामान चुरा ले गया, वहाँ कैसे बरताव करें, वह पुरुषार्थ है। तब ऐसे समय में सब तहस-नहस कर देते हैं और पूरा जन्म बिगाड़ लेते हैं!

भजना, भगवान की या पैसे की?

पैसे तो, याद आना, वह भी बड़ा जोख़िम है, फिर पैसों की भजना करनी वह तो कितना ज़्यादा जोख़िम होगा? मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह आपको समझ में आता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो समझ में आया लेकिन इसमें क्या जोख़िम है, वह समझ में नहीं आया। इसमें तो तुरंत ही, तात्कालिक लाभ होता है न! पैसे हों तो सभी चीज़ें मिल जाती हैं। ठाठ-बाट, मोटर, बंगला, सबकुछ प्राप्त होता है न!

दादाश्री : लेकिन क्या कोई पैसे की भजना करता है?

प्रश्नकर्ता : यही तो करते हैं न?

दादाश्री : फिर तो ऐसा हो गया न, कि महावीर की भजना बंद हो गई और यह भजना शुरू हो गई? मनुष्य एक ही जगह भजना कर सकता है, या तो पैसे की भजना कर सकता है या फिर आत्मा की। दो जगहों पर एक मनुष्य का उपयोग नहीं रह सकता। दो जगहों पर उपयोग कैसे रहेगा? एक ही जगह पर उपयोग रह सकता है, तो अब क्या करें? लेकिन इतना अच्छा है कि अब लोगों को पैसे साथ ले जाने की छूट मिली है। यह अच्छा है न?

प्रश्नकर्ता : पैसे कहाँ साथ ले जा सकते हैं? सब यहीं पर तो छोड़कर जाते हैं, कुछ साथ नहीं आता।

दादाश्री : अच्छा? लेकिन लोग तो साथ

ले जाते हैं न! नहीं, आपको वह कला नहीं आती! वह कला तो उस ब्लड प्रेशर वाले से पूछो कि उसकी कला कैसी है! वह आप नहीं जानते।

लक्ष्मी के कैफ में होता है तिरस्कार

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा है कि ज़्यादा पैसे हों तो मोह हो जाता है? ज़्यादा पैसे होना, वह शराब के समान ही है न?

दादाश्री : हर चीज़ का कैफ चढ़ता है। यदि कैफ न चढ़ता हो तो पैसे ज़्यादा हों तो भी हर्ज नहीं है। लेकिन कैफ चढ़ा तो शराबी हो गया। फिर लोग खुमारी में ही घूमते रहते हैं! लोगों का तिरस्कार करते हैं कि यह गरीब है, यह ऐसा है। यह बड़ा धनवान और लोगों को गरीब कहने वाला! खुद धनवान! व्यक्ति कब गरीब हो जाए वह कहा नहीं जा सकता। आप जो कह रहे हो वैसा ही, बहुत कैफ चढ़ जाता है। आपको तो नहीं चढ़ा न?

प्रश्नकर्ता : चढ़ा हुआ था, अब उतर गया।

दादाश्री : अच्छा किया। इतनी समझदारी की। विचारशील है न!

सच्चा सुख किसमें?

प्रश्नकर्ता : अभी पैसा ही मुख्य है, ऐसा क्यों?

दादाश्री : जब व्यक्ति को किसी तरह की सूझ नहीं पड़ती तब मान लेता है कि पैसों से सुख मिलेगा। वह दृढ़ हो जाता है, वह मानता है कि पैसों से विषय मिलेंगे, अन्य सभी कुछ मिलेगा। अब इसमें उसका भी दोष नहीं है। पहले (पूर्व जन्म में) ऐसे कर्म किए थे, उनका ये फल मिलता रहता है।

यह सुख तो सब माना हुआ सुख है। यदि पैसे होना ही सुख का कारण होता तो पैसे वाले तो बहुत सारे हैं बेचारे। उनमें भी बहुत लोग खुदकुशी करते हैं। यदि पति अच्छा हो तो सुख होता है। लेकिन बहुत से पति अच्छे होने पर भी पत्नियों को अपार दु:ख रहता है। बच्चे अच्छे हों तो सुख है। लेकिन ऐसा भी कुछ नहीं होता है।

सुख किसमें है? क्या इन स्टोर्स में हैं? ये जनरल स्टोर्स होते हैं न, उनमें हम सारी चीज़ें देखते हैं, क्या वे सब सुख देने वाली नहीं हैं? दो सौ डॉलर लेकर घुसे तो आनंद-आनंद हो जाता है। यह लिया और वह लिया और लाते समय फिर क्लेश। पति से कहती है, 'मैं अब ये सामान कैसे उठाऊँ?' तब पति कहता है कि, 'तो फिर लिया किसलिए?' वहाँ भी फिर क्लेश। पति ऐसा कहता है, 'बेकार में ही खरीदती हो और फिर अब चिल्ला रही हो।' उसमें सुख होता होगा? स्टोर वाले को भी सुख नहीं होता। वह किसलिए दिन भर वहाँ बैठा रहता है? अब पूछना हो तो पूछो। तुम्हारा समाधान कर दूँगा। तुम्हें जैसा सुख चाहिए वैसा सुख दूँगा।

क्या तुम्हें ये सारी बातें जाननी हैं और ऐसा करना है कि हमेशा भीतर में शांति बनी रहे? भीतर शांति हो जाने के बाद ये आपके खर्चे बंद हो जाएँगे, कम हो जाएँगे, तो क्या करोगे? इन स्टोर वालों की बिक्री कम हो जाएगी। इन स्टोर वालों की बिक्री किस कारण से है? अशांति के कारण। यह लूँगा तो सुख मिलेगा, वह लूँगा तो सुख मिलेगा, इस कारण से स्टोर वाले के यहाँ बिक्री है। ज्ञान के बाद हमारे महात्माओं के कारण स्टोर वाले के यहाँ बिक्री नहीं रहती क्योंकि वे तो आराम से घर जाते हैं। स्टोर में क्या करने जाएँगे? बाकी लोग तो भटकते रहते हैं।

जलन में नहीं मिलता सच्चा सुख

एक भी जीव ऐसा नहीं है जो सुख न ढूँढ रहा हो! और वह भी हमेशा का सुख ढूँढता है। वह ऐसा मानता है कि लक्ष्मी में सुख है लेकिन उससे भी भीतर जलन होने लगती है। जलन होना और हमेशा का सुख मिलना, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। दोनों विरोधाभासी हैं। इसमें लक्ष्मी जी का दोष नहीं है, उसका खुद का ही दोष है।

यदि आपको एक करोड़ रुपये दें तो आप क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : वह भी फिर *उपाधि* ही है न?

दादाश्री : दें तो क्या करोगे? हमें कहना चाहिए कि 'आपकी *उपाधि* है, वह मुझे क्यों दे रहे हो? मैं क्यों आपकी *उपाधि* लूँ? आप वापस ले जाओ।'

पैसों से कितना आनंद होता है! आपको पाँच लाख रुपये मिले, तो पहले उसे देखकर आपको बहुत आनंद होगा, फिर मन में *उपाधि* होगी कि अब कहाँ रखूँगा? कौन से बैंक में रखूँगा? फिर रास्ते में कोई लूट न ले, उसके लिए तैयारियाँ रखनी पड़ती हैं। रास्ते में यदि कोई लूट ले तो? अर्थात् वह सब सुख कहलाएगा ही नहीं। लुट जाने का भय है और लुट जाएँगे, उस चीज़ को सुख कह ही नहीं सकते।

जगत् की सारी चीज़ें अप्रिय लगने लगे और आत्मा तो खुद का स्वरूप है, वहाँ दुःख है ही नहीं। जगत् को तो पैसे देने वाला भी अप्रिय लगता है। पैसे कहाँ रखें, फिर *उपाधि* हो जाती है!

लौकिक सुख करवाता है *अजंपा*

इस लौकिक सुख के बजाय अलौकिक सुख होना चाहिए कि जिस सुख में हमें तृप्ति मिले। ये लौकिक सुख तो *अजंपा* (बैचेनी, अशांति, घबराहट) बढ़ाते हैं बल्कि! जिस दिन पचास हज़ार रुपये की कमाई हो जाए न, तो गिन-गिनकर ही दिमाग़ सारा खाली हो जाएगा। दिमाग़ तो इतना अधिक अधीरता वाला हो जाएगा कि खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। क्योंकि मेरे पास भी पैसा आता था, वह सब मैंने देखा है कि दिमाग़ कैसा हो जाता था तब! इनमें से कुछ भी मेरे अनुभव से बाहर का नहीं है न! मैं तो इस समुद्र में से तैरकर बाहर निकला हूँ, इसलिए मैं सब जानता हूँ कि आपको क्या होता होगा? अधिक रुपये आएँ, तब अधिक व्याकुलता होती है, दिमाग़ डल हो जाता है और कुछ याद नहीं रहता, *अजंपा* ही *अजंपा* रहा करता है। ये तो नोट गिनते ही रहते हैं, लेकिन वे सभी नोट यहीं के यहीं रह गए और गिनने वाले चले गए! नोट कहते हैं कि, 'तुझे समझना हो तो समझ लेना, हम रहेंगे और तू जाएगा!' इसलिए हमें ज़रा सावधान हो जाना चाहिए न! और कुछ नहीं, हमें उनके साथ कोई बैर नहीं बाँधना है। पैसे से हम कहें, 'आओ भाई।' उसकी ज़रूरत है! सभी की ज़रूरत तो है न? लेकिन ये तो उसके पीछे ही तन्मयाकार रहता है! तो गिनने वाले गए और पैसे रह गए। फिर भी गिनना पड़ता है, कोई चारा ही नहीं न! शायद ही कोई सेठ ऐसा होगा कि मुनीम जी से कहे कि, 'भाई, मुझे खाते समय परेशान मत करना। आप आराम से पैसे गिनकर तिजोरी में रखना और तिजोरी में से ले लेना।' उसमें दख़ल नहीं करे, ऐसा शायद ही कोई सेठ होगा! हिन्दुस्तान में ऐसे दो-पाँच सेठ होंगे जो निर्लेप रहें! वे मेरे जैसे!! मैं कभी भी पैसे नहीं गिनता!! यह क्या झंझट? इन लक्ष्मी जी को आज मैंने बीस-बीस सालों

से हाथ में नहीं पकड़ा, तभी इतना आनंद रहता है न!

जब तक व्यवहार है तब तक लक्ष्मी जी की भी ज़रूरत है, उसकी मनाही नहीं है, लेकिन उसमें तन्मयाकार नहीं होना चाहिए। तन्मयाकार तो नारायण में होना। सिर्फ लक्ष्मी जी के पीछे पड़ेंगे तो नारायण चिढ़ जाएँगे। लक्ष्मीनारायण का तो मंदिर है न! लक्ष्मी जी क्या कोई ऐसी-वैसी चीज़ है?

दोनों सुख में बेलन्स होना चाहिए

वास्तव में तो कुदरती नियम क्या है? आतंरिक सुख इस तरह लेवल में रहना चाहिए। आतंरिक सुख और बाह्य सुख लेवल में रहने चाहिए। शायद कभी, बाह्य सुख बढ़ा तो आतंरिक सुख कम हो जाता है और बाह्य सुख बढ़ा हो तो, इतना बढ़ा हो तो चलेगा, लेकिन यह तो ऐसा हो गया है (एकदम अप एन्ड डाउन)।

प्रश्नकर्ता : वह बहुत अधिक डिफरन्स (अंतर) है।

दादाश्री : यानी आंतरिक सुख रहा ही नहीं बिल्कुल भी। इंसान मेड (पागल) हो जाता है और अत्यधिक जलन होती है। आरोपित भाव है न, इसलिए बहुत ज़्यादा जलन होती है।

इन अंग्रेज़ों और अमरिकनों का पतन इसी प्रकार से है। भौतिक सुख में बहुत एब्नोर्मल हैं। उसी के कारण सारा पतन ही है। (भौतिक सुखों में) बैठे रहें इसलिए दिमाग़ का ठिकाना नहीं, ब्लड प्रेशर बढ़ गया होता है, उनकी मुश्किलें वे ही जानें!

प्रश्नकर्ता : क्या उनमें लोभ का अतिरेक नहीं है?

दादाश्री : लोभ तो है। लोभ के कारण ही तो यह सब हुआ, लेकिन लोभ का यह परिणाम आया! लोभ के अतिरेक से ही तो यह परिणाम आया है।

अनंत जन्मों से भटकते-भटकते इस भौतिक के ही पीछे पड़े हैं। इस भौतिक से अंतर शांति नहीं मिलती। रुपयों का बिस्तर बिछा लेने से क्या नींद आएगी?

यदि पैसों का बिस्तर बनाए तब भी नींद नहीं आती और उससे कोई सुख नहीं मिलता। चाहे जितने भी पैसे हों फिर भी दुःख। यानी वहाँ दुःख, दुःख और दुःख ही है।

जीवन किस हेतु के लिए?

दो हेतु के लिए लोग जीते हैं। आत्मार्थ के लिए जीने वाला तो कोई ही व्यक्ति होता है। अन्य सभी लक्ष्मी के लिए जीते हैं। पूरा दिन लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी! लक्ष्मी जी के पीछे तो पूरा संसार ही पागल हो चुका है न! फिर भी उसमें कभी भी सुख है ही नहीं! घर बंगले ऐसे ही खाली पड़े रहते हैं और पँखे घूमते रहते हैं, दोपहर को वे कारखाने में होते हैं। भोगने का तो... राम, तेरी माया! इसलिए आत्मज्ञान जानो! खुद के स्वरूप की ओर दृष्टि ही नहीं गई। खुद कौन है, उस ओर कभी दृष्टि ही नहीं की। यों अंधे की तरह कब तक भटकते रहना है? यह तो खुद की सभी अनंत शक्तियाँ व्यर्थ हो गईं!

प्रश्नकर्ता : ये पैसे कमाना अच्छा न लगे, इस संसार में रहकर ये जो सारी विडंबनाएँ हैं, उन्हें भोगना अच्छा न लगे। ऐसा सब जब मन में आए तब फिर अध्यात्म की ओर जाने की वृत्ति उत्पन्न होती है, वह ठीक है?

दादाश्री : यह संसार यदि कड़वा लगेगा तो वह अध्यात्म मीठा लगेगा। जब तक इसमें कड़वाहट नहीं लगती तब तक वह मीठा कैसे लगेगा?

प्रश्नकर्ता : वही बात है कि, यह कड़वा लगता है इसलिए फिर मीठे की तरफ जाते हैं न!

दादाश्री : अब कड़वा किसे लगता है? जो पहले डेवेलप होता-होता आया हो उसे।

प्रीति, लक्ष्मी पर या नारायण पर?

पूरी दुनिया ने लक्ष्मी को ही मुख्य माना है न! हर एक काम में लक्ष्मी ही मुख्य है इसलिए लक्ष्मी पर ही ज़्यादा प्रीति है। जब तक लक्ष्मी पर ज़्यादा प्रीति होगी तब तक भगवान पर प्रीति नहीं हो सकती। भगवान पर प्रीति होने के बाद लक्ष्मी पर से प्रीति खत्म हो जाएगी। दोनों में से एक पर ही प्रीति हो सकती है, या तो लक्ष्मी पर या नारायण पर। जहाँ आपको ठीक लगे वहाँ रहो। लक्ष्मी वैधव्य (दुःख) लाएगी। जो सुखी करती है वही रुलाती भी है जबकि नारायण रुलाते भी नहीं और हँसाते भी नहीं, निरंतर आनंद में रखते हैं, मुक्त भाव में रखते हैं।

ज्ञानी पुरुष के पास एक बार नाभि से (खुलकर) हँसे न, तभी से भीतर भगवान के साथ तार जॉइन्ट हो जाता है। क्योंकि आपके अंदर भगवान बैठे हुए हैं। बस इतना ही है कि हमारे अंदर भगवान पूर्ण रूप से व्यक्त हो चुके हैं जबकि आपके अंदर व्यक्त नहीं हुए हैं। लेकिन कैसे व्यक्त होंगे? जब तक भगवान के सम्मुख नहीं हुए हो, तब तक वे व्यक्त कैसे होंगे? क्या आप कभी भगवान के सम्मुख हुए थे?

प्रश्नकर्ता : वैसे तो हम लक्ष्मी के सम्मुख हुए हैं।

दादाश्री : वह तो सारी दुनिया ही लक्ष्मी के सम्मुख हुई है न! और सेठ, आप लक्ष्मी के सम्मुख हुए हो या विमुख?

प्रश्नकर्ता : मैं तो इसके प्रति उदासीन हूँ।

दादाश्री : ऐसा? यानी ऐसा है कि आप सम्मुख भी नहीं हो और विमुख भी नहीं? उदासीनता तो बहुत बड़ी चीज़ है। लक्ष्मी आए तो भी ठीक है और न आए तो भी ठीक है!

पैसों में रुचि, वहाँ एकाग्रता

ज़बरदस्ती भगवान से प्रीति करने जाएँ तो उससे क्या फायदा? और रुपयों के प्रति देखो न, कोई कहता नहीं है, फिर भी इतना एकाग्र कि उस पल तो पत्नी-बच्चे, सब भूल जाता है!

लक्ष्मी का प्रताप कितना सुंदर है, नहीं? लक्ष्मी, सोना वगैरह सब एक में ही आ गया। अन्य ऐसी कोई चीज़ है, जो सबकुछ भुला दे? ऐसी, जो एकाग्र करवा दे?

प्रश्नकर्ता : याद नहीं आ रहा है।

दादाश्री : नहीं? स्त्री और लक्ष्मी। ये दोनों सभी कुछ भुला देते हैं। भगवान की तो याद ही नहीं आने देते। यह तो आपको थोड़े-बहुत याद आते हैं लेकिन एकाग्रता कैसे रह सकती है? भगवान के प्रति भाव ही नहीं है न! जहाँ रुचि, वहाँ एकाग्रता। नियम कैसा है? जहाँ रुचि, वहाँ एकाग्रता। अगर रुचि नहीं है तो एकाग्रता कैसे रहेगी?

अत: प्रीति पैसों पर है। जहाँ प्रीति हो वहाँ एकाग्रता रहती ही है। भगवान पर प्रीति नहीं है।

इतनी ही प्रीति यदि भगवान पर हो जाए तो उनमें एकाग्रता रहेगी।

प्रश्नकर्ता : तो पैसों पर से प्रीति कैसे हटाएँ?

दादाश्री : इन दोनों में से किसकी कीमत ज़्यादा है, सभी लोगों से पूछना है कि पैसों की कीमत ज़्यादा है या भगवान की? जिसकी कीमत हो वहाँ प्रीति करो। हमें पैसों की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमें भगवान पर प्रीति है। चौबीसों घंटे भगवान के साथ रहते हैं। इसलिए हमें पैसों की प्रीति नहीं है।

जब तक पैसों में 'इन्टरेस्ट' (रुचि) है तब तक पैसे-पैसे करता है और भगवान में 'इन्टरेस्ट' आया तो पैसे का 'इन्टरेस्ट' छूट जाएगा। यानी कि आपका 'इन्टरेस्ट' बदलना चाहिए।

अब भगवान में 'इन्टरेस्ट' नहीं है, तो उसमें आपका दोष नहीं है। जो वस्तु देखी नहीं हो, उसमें 'इन्टरेस्ट' किस तरह आएगा? इस साड़ी को तो आप देखती हो, उसके रंगरूप देखते हो इसलिए उसमें 'इन्टरेस्ट' आएगा ही। लेकिन भगवान तो दिखते ही नहीं न! तब ऐसा कहा है कि, भगवान के प्रतिनिधि, ऐसे जो 'ज्ञानी पुरुष' हैं, वहाँ पर आपका 'इन्टरेस्ट' रखो। वहाँ 'इन्टरेस्ट' आएगा और उनमें 'इन्टरेस्ट' आया, तो भगवान को पहुँच गया समझो।

जहाँ कषाय हैं, वहाँ 'इन्टरेस्ट' रहे तो वे 'इन्टरेस्ट' कषायिक होते हैं। वह कषायिक प्रतीति है। वह प्रतीति टूट जाती है बाद में, यानी राग से बैठती और द्वेष से छूटती है और ये भगवान के प्रतिनिधि में 'इन्टरेस्ट' राग से नहीं आता। उनके पास राग करने जैसा कुछ होता ही नहीं न!

ज्ञानी की संज्ञा से चलो

अर्थात् यह भूल प्रीति की है, आप वहाँ पर प्रीति में लोकसंज्ञा से चले। लोग क्या कहते हैं कि 'पैसों से सुख है' वैसा आपने भी मान लिया। भगवान का कहना नहीं माना। भगवान ने कहा है कि 'लोकसंज्ञा में सुख नहीं है, ज्ञानी की संज्ञा से मोक्ष है।' लोगों ने पैसों में सुख माना, विषयों में सुख माना और आप यदि पैसों और विषयों में सुख मानोगे तो भगवान का कहा हुआ नहीं मानते हैं। भगवान ने क्या कहा है कि 'ज्ञानी की संज्ञा से चलना।' ज्ञानी ने जिसमें सुख बताया उसमें बरतो।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी के कहे अनुसार बरतना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, ज्ञानी का खुद का मोक्ष हो चुका है और वे आपको मोक्ष के रास्ते पर ही ले जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : धर्म में और व्यवहार में सभी जगह लागू हो और सुख रहे ऐसी कौन-सी चीज़ है?

दादाश्री : हमसे स्वरूप का ज्ञान ले जाए तो उसे सबकुछ सुख वाला ही होता है। और जिसके अंतराय हों और ज्ञान नहीं लेना हो तो वे हमें सब पूछ लें और समझ लें कि 'यह संसार किस तरह चलता है? यह सब क्या है?' तब भी उसे सुख रहेगा।

जीव-मात्र क्या ढूंढता है? आनंद ढूंढता है, परन्तु क्षणभर भी आनंद नहीं मिलता। शादी में जाए या नाटक में जाए, पर वापिस फिर दुःख आता है। जिस सुख के बाद दुःख आए, उसे सुख कहेंगे ही कैसे? वह तो मूर्छा का आनंद

कहलाता है। सुख तो 'परमानेन्ट' होता है। यह तो 'टेम्परेरी' सुख हैं और फिर कल्पित हैं, माना हुआ है। हर एक आत्मा क्या ढूंढता है? हमेशा के लिए सुख, शाश्वत सुख ढूंढता है। वह 'इसमें से आएगा, इसमें से आएगा, यह ले लूँ, ऐसा करूँ, बंगला बनवाऊँ तो सुख आएगा, गाड़ी लूँ तो सुख आएगा' ऐसा करता रहता है। पर कुछ सुख आता नहीं। बल्कि और अधिक जंजालों में फँसता है। सुख खुद के भीतर ही है। आत्मा में ही है। इसलिए आत्मा प्राप्त करे तो सुख ही प्राप्त होगा।

रात को साढ़े दस बजे सो गए और किसी को दो सौ रुपये उधार दिए हों और विचार आए कि 'आज उसकी मुद्दत पूरी हो गई, उसका क्या होगा?' फिर नींद आएगी क्या? उस घड़ी पर समाधान होने का साधन चाहिए या नहीं चाहिए? समाधान हो तो ही शांति रहेगी न? समाधान के बिना तो मनुष्य 'मेड' हो जाता है, 'ब्लड प्रेशर' बढ़ जाता है और 'हार्ट' के दर्द खड़े हो जाते हैं। समाधान हो जाए, तो कुछ चैन मिले।

टेम्परेरी आनंद - परमानेन्ट आनंद

प्रश्नकर्ता : आपने 'टेम्परेरी' आनंद कहा है और दूसरा 'परमानेन्ट' आनंद कहा है, पर हमने जब तक वह सुख नहीं भोगा, तब तक उन दोनों में फर्क किस तरह पता चलेगा?

दादाश्री : उसका पता ही नहीं चलता। जब तक 'परमानेन्ट' सुख नहीं आया है तब तक इसे ही आप सुख कहते हो।

एक गोबर में रहने वाला कीड़ा हो, उसे फूल में रखें तो वह मर जाएगा। क्योंकि उसे इस सुख की आदत है, परिचित है, उसकी प्रकृति ही ऐसी बन गई है। और फूल के कीड़े को गोबर में अच्छा नहीं लगेगा।

लोग कहेंगे कि पैसों में सुख है, पर कुछ साधु महाराज ऐसे होते हैं कि उन्हें पैसे दें तो भी वे नहीं लेते। आप मुझे पूरे जगत् का सोना देने आओ तो भी मैं वह नहीं लूँ। क्योंकि मुझे पैसे में सुख लगता ही नहीं है। यदि पैसों में सुख हो तो सभी को उसमें से वह सुख लगना चाहिए। जबकि आत्मा का सुख तो सब को ही महसूस होता है। क्योंकि वह सच्चा सुख है, सनातन सुख है। वह आनंद तो कल्पना में भी नहीं आए, उतना अधिक आनंद है!

जहाँ आत्मा-परमात्मा के अलावा दूसरी कोई बात नहीं होती, वहाँ पर सच्चा आनंद है, वहाँ संसार की किंचित् मात्र भी बात नहीं होती कि संसार में से किस तरह फायदा हो, किस तरह गुण उत्पन्न हों। लोग सद्गुण उत्पन्न करना चाहते हैं। ये गुण, सद्गुण, दुर्गुण, ये सब अनात्म विभाग हैं और विनाशी हैं। फिर भी लोगों को उनकी ज़रूरत है। हर एक को हर एक की अपेक्षा के अनुसार अलग-अलग चाहिए। लेकिन जिसे संपूर्ण वीतराग पद चाहिए तो इन सारे सद्गुणों, दुर्गुणों से परे होना चाहिए और 'खुद कौन है' वह जानना चाहिए और वह जानने के बाद आत्मा-परमात्मा की बातों में ही रहे, तो उससे संपूर्ण वीतराग दशा उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : सच्चा सुख मिल नहीं रहा और समय बीतता जा रहा है।

दादाश्री : सच्चा सुख चाहिए तो आपको सच्चा बनना पड़ेगा और संसारी सुख चाहिए तो संसारी बनना पड़ेगा। संसारी सुख पूरण-गलन

स्वभाव का है, आता है और फिर उड़ जाता है, वह द्वंद्व वाला है। 'मैं कौन हूँ', उसका खयाल आ जाए, बाद में ही हमेशा सच्चा सुख बरतता है।

संतोष कब रहता है?

प्रश्नकर्ता : लोग तो पैसों के पीछे पड़े हैं, संतोष क्यों नहीं रखते?

दादाश्री : यदि हम से कोई कहे कि संतोष रखो तो हमें कहना चाहिए कि भाई, आप क्यों नहीं रखते और मुझसे कह रहे हो? वस्तुस्थिति में संतोष, रखने से रह पाए, ऐसा नहीं है। उसमें भी किसी के कहने पर रहे, ऐसा नहीं है। संतोष तो, स्वाभाविक रूप से अपने आप जितना ज्ञान हो उस हिसाब से रहता ही है। संतोष करने जैसी चीज़ नहीं है। वह तो परिणाम है। जैसी आपने परीक्षा दी होगी वैसा ही परिणाम आएगा। उसी तरह जितना ज्ञान होगा उतना परिणाम संतोष रहेगा। संतोष रहे इसीलिए तो ये लोग इतनी मेहनत करते हैं!

लोभ का प्रतिपक्षी शब्द है संतोष। पूर्व जन्म में थोड़ा-बहुत ज्ञान समझा हो, आत्मज्ञान नहीं लेकिन संसारी ज्ञान समझा हो, उनमें संतोष उत्पन्न हुआ होता है और जब तक यह नहीं समझा हो, तब तक उसे लोभ रहा करता है।

अनंत जन्मों तक खुद भोग चुका होता है, तब उसका संतोष रहता है कि कोई चीज़ नहीं चाहिए। और जिन्होंने नहीं भोगा हो उन्हें कई तरह के लोभ घुस जाते हैं! फिर यह भोग लूँ, वह भोग लूँ और फलाना भोग लूँ, ऐसा रहा करता है।

संतोष क्या है? खुद पहले भोग चुका है, इसलिए उसका संतोष रहता है।

तृप्ति से शांत होती है लक्ष्मी की तृष्णा

संसार का खाएँ, पीएँ और भोगें, उससे संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती। संतोष में से नए बीज डलते हैं लेकिन तृप्ति हो गई तो तृष्णा उत्पन्न नहीं होती, तृष्णा खत्म हो जाती है। तृप्ति और संतोष में बहुत फर्क है। संतोष तो सब को होता है लेकिन तृप्ति तो कुछ लोगों को ही होती है। संतोष में फिर से विचार आते हैं। खीर खाने के बाद उससे संतोष होता है। लेकिन फिर से उसकी इच्छा रहती है, इसे संतोष कहते हैं। जबकि तृप्ति के बाद तो फिर से इच्छा ही नहीं होती, उसका विचार तक नहीं आता। तृप्ति वाले को तो विषय का एक भी विचार नहीं आता। ये तो चाहे कितने भी समझदार हों लेकिन तृप्ति नहीं होने से विषयों में फँस गए हैं! वीतराग भगवान का विज्ञान, वह तो तृप्ति ही लाने वाला है।

लोग कहते हैं, 'मैं खाता हूँ।' अरे, भूख लगी है उसे बुझा रहे हो न? यह पानी की प्यास अच्छी है लेकिन लक्ष्मी की प्यास भयंकर कहलाती है! उसकी तृप्ति कैसे भी पानी से नहीं होती। वह इच्छा कभी पूर्ण होती ही नहीं। संतोष होता है लेकिन तृप्ति नहीं होती।

साधनों में तृप्ति मानना, वह मनोविज्ञान है और साध्य में तृप्ति मानना, वह आत्मविज्ञान है।

अक्रम विज्ञान ही छुड़वाएगा

प्रश्नकर्ता : अपने महात्माओं को ऐसे भाव रहने चाहिए न कि इस व्यापार में से छूट जाएँ?

दादाश्री : ऐसे भाव नहीं रहते हों, तब भी यह अक्रम विज्ञान ही उनके भाव छुड़वाएगा। यदि ऐसे भाव रहते हों तो उत्तम ही है। ऐसे भाव

रहते हों तो हमें अक्रम की राह नहीं देखनी चाहिए और ऐसे भाव न रहते हों तो हमें उसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। अक्रम उन्हें धक्का देकर छुड़वा देगा। वह बुखार चढ़ा कि चारों ओर से उसे छुड़वाने की तैयारी करवाता है।

व्यापार की बाबत में, व्यापार में सिन्सियर रहना है लेकिन चिपकना नहीं है। हो जाएगा, अब तो 'व्यवस्थित' है। यदि 'देर होगी तो कोई हर्ज नहीं है', ऐसा नहीं होना चाहिए। 'व्यवस्थित' है, देर होगी, तो क्या हर्ज है?' ऐसे शब्द नहीं होने चाहिए। वहाँ भी सिन्सियरिटी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : धन संग्रह करना, चिकनाहट माना जाएगा या नहीं?

दादाश्री : नहीं, संग्रह करने में कोई हर्ज नहीं है। संग्रह तो करना चाहिए। फेंक देना, वह गाढ़ हुआ कहलाएगा। अच्छे उपयोग के बिना फेंक देने से वह बिगड़ता है। संग्रह किया हुआ नहीं बिगड़ता। वह तो काम आएगा, आपको हेल्प करेगा। लेकिन उस पर चिकनाहट नहीं होनी चाहिए! और संग्रह किया हुआ याद नहीं रहना चाहिए। चाहे बीस लाख हों। बस गाढ़ मत करना। मुझे तो, घी लग जाए तो भी चिकनाहट नहीं। जो भी डालो, उसकी चिकनाहट नहीं। कई लोगों की जीभ ऐसी होती है कि उस पर घी रखो फिर भी जीभ चिपचिपी नहीं होती और कई लोग तो दूध पीएँ तो भी जीभ चिपचिपी हो जाती है। जीभ की ऐसी कपैसिटी होती है कि किसी भी तरह की चिपचिपाहट को मिटा देती है। उसी तरह इसमें भी कुछ कपैसिटी (क्षमता) होती है और वह अब आप में उत्पन्न होगी!

रुपये हाथ में लेना ज़रूर लेकिन हाथ चिपचिपा मत होने देना। हाथ चिपचिपा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, यानी क्या? ज़रा समझाइए न।

दादाश्री : लोगों को पैसों के प्रति अभाव तो रहता नहीं लेकिन अब पैसों के प्रति भाव नहीं हो जाना चाहिए। अभाव तो नहीं रहता न! ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है! हमें उस पर भाव-अभाव, दोनों ही नहीं होते और आपको भाव हो जाते हैं। पैसों पर भाव हो जाते हैं। क्योंकि अभाव नहीं है इसलिए उस तरफ बैठ जाते हैं, वह भी अब आपके डिस्चार्ज में है, चार्ज में नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि आप, अपने हाथों से ही मेरे पैसे दान स्वरूप स्वीकार करेंगे तो मुझे आनंद होगा। तब मैं ले लेता हूँ, 'लाओ, भाई लाओ।' मैं उसे चिपकने दूँ तब न! चिपकेगा तो झंझट है न!

लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन

लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन है, उसका (मेन) प्रोडक्शन नहीं हो सकता। उसका यदि प्रोडक्शन हो सकता तो हम कारखाना बनाते, तो प्रोडक्शन में अंदर से पैसे मिलते, लेकिन नहीं, लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्शन है। पूरे जगत् को लक्ष्मी की ज़रूरत है। तो फिर हम ऐसी क्या मेहनत करें कि पैसा अपने पास आए! इसे समझने की ज़रूरत है। लक्ष्मी, वह बाइ प्रोडक्शन है। इसलिए अपने आप प्रोडक्शन में से आएगी, सहजभाव से आए, ऐसी है। जबकि लोगों ने लक्ष्मी के कारखाने बना दिए, प्रोडक्शन ही उसे बना दिया।

यह काल कैसा है? अभी तो इस काल के लोगों को, कहाँ से सामान ले आऊँ, किस तरह दूसरों का हड़प लूँ, किस तरह मिलावटी सामान बेचना, *अणहक्क* (बिना हक्क का) के विषयों को भोगना और इसमें से फुरसत मिले

तो दूसरा कुछ खोज सकेंगे न? इससे सुख कहीं बढ़ नहीं गए। सुख तो कब कहलाता है? जब मेन प्रोडक्शन करे तब। यह संसार तो बाइ प्रोडक्ट है। पिछले जन्म में कुछ किया होगा, उससे यह देह मिली है। भौतिक चीज़ें मिली हैं, पत्नी मिली, बंगला मिला। यदि मेहनत से मिलता तब तो मज़दूरों को भी मिलता, लेकिन ऐसा नहीं है। आज के लोगों में समझ बदल गई है। इसलिए ये बाइ प्रोडक्शन के कारखाने खोल लिए हैं। बाइ प्रोडक्शन का कारखाना नहीं खोलना चाहिए।

लक्ष्मी लक्ष्य में रहनी नहीं चाहिए।

हर एक काम का हेतु होता है कि किस हेतु से यह काम किया जा रहा है। उसमें यदि उच्च हेतु तय किया जाए, यानी क्या कि यह अस्पताल बनाना है, तो पेशेन्ट किस तरह स्वास्थ्य प्राप्त करें, किस प्रकार सुखी हों, किस तरह ये लोग आनंद में आए, कैसे उनकी जीवनशक्ति बढ़े, ऐसा अपना उच्च हेतु तय किया हो और सेवाभाव से ही वह काम किया जाए, तब उसका बाइ प्रोडक्शन क्या? लक्ष्मी! अत: लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्ट है, उसे (मेन) प्रोडक्शन मत मानना। पूरे जगत् ने लक्ष्मी को (मेन) प्रोडक्शन बना दिया है इसलिए फिर उसे बाइ प्रोडक्शन का लाभ नहीं मिलता। अत: आप यदि सिर्फ सेवा का भाव ही तय करो तो उसके बाइ प्रोडक्शन में तो फिर और अधिक लक्ष्मी आएगी। यानी यदि लक्ष्मी को बाइ प्रोडक्ट में ही रखें तो लक्ष्मी अधिक आती है, लेकिन यह तो लक्ष्मी के हेतु से ही लक्ष्मी के लिए प्रयत्न करते हैं, इसलिए लक्ष्मी नहीं आती। इसलिए आपको यह हेतु बता रहे हैं कि यह हेतु रखना 'निरंतर सेवाभाव।' तो बाइ प्रोडक्ट अपने आप ही आता रहेगा। जिस तरह बाइ प्रोडक्ट में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, खर्चा नहीं करना पड़ता, वह फ्री ऑफ कॉस्ट होता है, उसी तरह यह लक्ष्मी भी फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती है। आपको ऐसी लक्ष्मी चाहिए या *ऑन* (मूल क़ीमत से ज़्यादा में बेचना) की लक्ष्मी चाहिए? *ऑन* की लक्ष्मी नहीं चाहिए? तो फिर अच्छा है! अगर फ्री ऑफ कॉस्ट मिले तो वह कितनी अच्छी! अत: सेवाभाव तय करो, मनुष्य मात्र की सेवा। क्योंकि हमने अस्पताल खोला यानी कि हम जो विद्या जानते हैं सेवाभाव में उस विद्या का उपयोग करें, वही अपना हेतु होना चाहिए। उसके फलस्वरूप दूसरी चीज़ें फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती रहेंगी और फिर लक्ष्मी तो कभी भी कम नहीं पड़ेगी। और जो लक्ष्मी के हेतु से ही करने गए उन्हें नुकसान हुआ है। हाँ, और लक्ष्मी के हेतु से ही कारखाना बनाया, फिर बाइ प्रोडक्ट तो रहा ही नहीं न! क्योंकि लक्ष्मी खुद ही बाइ प्रोडक्ट है, (मेन) प्रोडक्शन का! अत: हमें (मेन) प्रोडक्शन तय करना है, ताकि बाइ प्रोडक्शन फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता रहे।

बाकी का सारा प्रोडक्शन बाइ प्रोडक्ट होता है, उसमें आपको ज़रूरत की सभी चीज़ें मिलती रहेंगी और वे ईज़िली मिलती रहेंगी। देखो न! यह पैसों का (मेन) प्रोडक्शन किया है इसलिए आज पैसे ईज़िली नहीं मिलते। भागदौड़, बदहाल होकर घूम रहे हों ऐसे घूमते हैं और मुँह पर अरंडी का तेल चुपड़कर घूम रहे हों, ऐसे दिखते हैं! घर में अच्छा खाने-पीने का है, कितनी सुविधाएँ हैं, रास्ते कितने अच्छे हैं! रास्ते पर चलें तो पैर धूल वाले नहीं होते! इसलिए मनुष्यों की सेवा करो। मनुष्य में भगवान विराजमान हैं, भगवान भीतर ही बैठे हैं। बाहर भगवान ढूँढने जाओगे तो वे मिलेंगे नहीं। आप इंसानों के डॉक्टर हो

इसलिए आपको इंसानों की सेवा करने को कहता हूँ। जानवरों के डॉक्टर होंगे तो उन्हें जानवरों की सेवा करने का कहूँगा। जानवरों में भी भगवान विराजमान हैं। लेकिन इन मनुष्यों में भगवान विशेष रूप से प्रकट हुए हैं!

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह प्रोडक्शन है और उसकी वजह से बाइ प्रोडक्ट मिलता है और संसार की सभी ज़रूरतें पूरी होती हैं। मैं अपना एक ही तरह का प्रोडक्शन रखता हूँ, 'जगत् परम शांति को प्राप्त करें और कुछ मोक्ष को पाएँ।' मेरा यह प्रोडक्शन और उसका बाइ प्रोडक्शन मुझे मिलता ही रहता है। ये चाय-पानी, जैसा आपको मिलता है, हमें उससे कुछ अलग ही प्रकार का मिलता है, उसका क्या कारण है? आपकी तुलना में मेरा प्रोडक्शन उच्च कोटि का है। यदि आपका प्रोडक्शन भी उतना ही उच्च कोटि का होगा तो बाइ प्रोडक्शन भी उच्च कोटि का आएगा।

मेन प्रोडक्शन यानी मोक्ष का साधन 'ज्ञानी पुरुष' से प्राप्त कर लेना चाहिए। फिर संसार का बाइ प्रोडक्शन तो अपने आप मुफ्त में आएगा ही। बाइ प्रोडक्शन के लिए तो दुर्ध्यान करके अनंत जन्म बिगाड़ लिए! एक बार मोक्ष पा ले तो तूफान खत्म होगा!

समकिती का, लक्ष्मी का व्यवहार

प्रश्नकर्ता : दादा के महात्माओं के पास लक्ष्मी हो तो उन्हें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं है। आपको हर्ज नहीं है, आपको (चंदूभाई को) तो लक्ष्मी का व्यवहार करना है। दादा आपके साथ हैं। यदि आपको मुश्किल आ पड़े तो हम से पूछना, बस इतना ही। यह सब तो मुझे करना है। मैं आपको कह रहा हूँ न कि यह सब मुझे करना है। आपको (शुद्धात्मा को) कुछ भी नहीं करना है। आपको मेरी आज्ञा में रहना है।

सब आएगा, आपको क्या होने वाला है कि रुपयों के साथ व्यवहार तो करना रहा। यह व्यवहार आपका नहीं है फिर भी करना पड़ता है, ऐसा रहना चाहिए। 'करने जैसा नहीं है फिर भी करना पड़ता है', ऐसा कहना। उसके शौक़ीन न हो जाओ इतना ध्यान रखना। खाओ, पीओ, सब खाना ऐसा कहता हूँ।

अब पैसे सही मार्ग में जाए, ऐसा करना। सही मार्ग पर यानी खुद के अलावा औरों के लिए खर्च करना। या फिर अच्छी पुस्तकें छपवाकर दी जाएँ, तो लोगों के लिए हितकारी होंगी और वह ज्ञानदान कहा जाएगा। सुमार्ग में, धर्म दान में जा रहे हों तो जाने देना।

आप सारे पैसे कमाने में लगाते हो, जबकि मैं कहता हूँ कि, 'अरे, पैसे खर्च कर दो यहाँ। और मैं तो पैसे छूता भी नहीं।' पैसे सत्य नहीं हैं, संपूर्ण सत्य नहीं है। वह सापेक्ष सत्य है। यह सोना मुझे दो तो, वह मेरे काम का ही नहीं है। मुंबई में सभी बहनों ने गले की मालाएँ निकालकर दीं तो मैंने कहा कि, 'ये मेरे काम की नहीं हैं। यदि आपको मोह हो तो रहने देना। मुझे आपके ये नहीं चाहिए।' तब उन्होंने कहा, 'नहीं, हमने इतना भाव किया है, इसलिए दे देना है।' तो मैंने कहा कि, 'आपकी मर्ज़ी की बात है। बाकी हमें नहीं चाहिए।' सीमंधर स्वामी भगवान के मुकुट बनाने के लिए उन्होंने ऐसा भाव किया है। तब मैंने कहा, 'दे दो आप।' बाकी, हमें कुछ नहीं चाहिए।

लक्ष्मी पर प्रेम घटा कि हो गया आत्मा

आप जो पाना चाहते हो वह मुझसे कब पाओगे? मेरे नज़दीक कब आ सकते हो? आपकी सब से प्यारी चीज़ मुझे अर्पण कर दोगे, तब। संसार में, व्यवहार में जो प्यारी चीज़ हो, उसे अर्पण कर दोगे तो नज़दीक आ सकोगे। आपने तो मन, वचन, काया मुझे अर्पण किए हैं। लेकिन अभी भी एक चीज़ बाकी रह गई है, लक्ष्मी! उसे आप अर्पण करोगे तो नज़दीक आ पाओगे। अब, मुझे तो ज़रूरत नहीं हैं। तो मुझे कैसे अर्पण करोगे? तब कहते हैं कि ऐसा कोई रास्ता निकले, तो अर्पण किया जा सकता है! यानी पिछले साल आपने जब लक्ष्मी दी, उसके बाद से आप और भी करीब आ गए, क्या आपको ऐसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : यही वह कला है इसकी, वर्ना चिपकते नहीं। अलग ही रहा करता है। अब, अपने यहाँ तो पैसे लेने का कुछ था ही नहीं न! हम तो लेते ही नहीं थे न! तब तक मन जुदा ही रहा करता है। पैसों की बात आए तो मन वहाँ चिपक जाता है। वर्ना मन वहाँ से उखड़ जाता है। ज्ञानी पुरुष पर लोगों की प्रीति होती है इसलिए ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि तू इसे बाहर दे दे (परायों के लिए खर्च कर)!

लक्ष्मी पर प्रेम घटा कि आत्मा हो गया!

सबसे अंतिम 'स्टैन्ड' है, अब जागो

मुझसे लोग पूछते हैं कि, 'समाधि सुख कब बरतेगा' तब मैंने कहा, 'जिसे कुछ भी नहीं चाहिए। लोभ की ग्रंथि छूट जाएगी, तब।' लोभ की ग्रंथि छूटने पर सुख बरतता रहता है। बाकी, ग्रंथि वाले को तो कोई सुख आता ही नहीं है न! इसलिए लुटा दो, जितना लुटा दोगे, उतना आपका!

अनंत जन्मों से यही किया है न! और इसी से, लोभ से ही मुझे शांति रहती है, मन में उसे ऐसा फिट हो चुका है न! अब, वह लोभ भी कभी मार खिलाता है। जबकि इससे शांति रहती है और सुख मिलता है। आत्मा हुआ तब फिर लोभ छूटता जाता है। अभी तक अंतिम स्टेशन लोभ था। अब अंतिम स्टेशन आत्मा हुआ इसलिए अपने आप प्रवृत्तियाँ बदलती जाती हैं!

इस काल में अब भी कुछ समझने जैसा है। अब काल ऐसा आ रहा है कि लगभग दो-तीन हज़ार साल तक ठीक चलेगा। बहुत ऊँची स्थिति आएगी। भगवान महावीर के समय जैसी स्थिति आएगी। इसलिए उस अरसे में काम निकाल लो तो अच्छा है। अब नए सिरे से परिणति बदलनी है कि अब ज्ञानी के लिए ही जीना है। बाकी का सब तो हिसाब है, वह तो मिलता रहेगा, आपको कार्य करते रहना है। आपका कार्य करना है। फल तो उसका मिलता ही रहेगा। बाकी सारे भाव, दूसरी परिणति बदलने जैसी है। बाकी, क्या साथ ले जाने वाले हो यह सब?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : भले ही कितने भी रुपये होंगे, लेकिन अंत में कहीं रुपये साथ में नहीं आते, इसलिए कुछ काम निकाल लो। अब फिर से मोक्षमार्ग नहीं मिलेगा। फिर इक्यासी हज़ार सालों तक मोक्षमार्ग भी हाथ में नहीं आएगा। यह सबसे अंतिम 'स्टैन्ड' है, अब आगे 'स्टैन्ड' नहीं है।

जय सच्चिदानंद

व्यापार में सही-गलत

व्यापार में, मन बिगाड़े तो भी फायदा ६६,६१६ होगा और मन नहीं बिगाड़े तो भी फायदा ६६,६१६ रहेगा, तब कौन सा व्यापार करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हम जो व्यापार करते हैं उसमें सही-गलत भी करना पड़ता है, तब क्या करें?

दादाश्री : आपको जितना समझ में आए, सही और गलत, उतना ही न? या आपको ऐसा समझ में आया कि सब गलत है?

प्रश्नकर्ता : सब गलत तो नहीं होता न!

दादाश्री : आपको जितना समझ में आए उतना करो। छोटा बच्चा उसके हिसाब से करता है और बड़ी उम्र वाले उनके हिसाब से करते हैं, हर कोई अपनी समझ के अनुसार सही-गलत समझता है। छोटे बच्चे को हीरा दें तो वह हीरा लेकर बाहर खेलने चला जाएगा और कोई बिस्किट देंगे तो वह हीरा दे देगा क्योंकि उसे इतनी समझ नहीं है न! आपको सही-गलत की समझ कहाँ से मिली?

प्रश्नकर्ता : दुनियादारी के हिसाब से जो कहते हैं न, और फिर खुद को ऐसा लगता हो कि यह गलत है। किसी को सामान बेचने को हम झूठ बोले, वह सब तो गलत कहलाएगा न?

दादाश्री : वह तो हमें दु:ख हो उस समय अंदर खराब लगता है। खुद को समझ में आता है कि यह गलत हो रहा है और सुख हो तो खुद को समझ में आता है कि यह अच्छा ही हो रहा है। आप दान दे रहे हों तो आपको भीतर में सुख लगेगा। खुद के घर के रुपये दें तो भी सुख मिलता है क्योंकि अच्छा काम किया। अच्छा काम करने से सुख होता है और गलत काम करते समय दु:ख होता है। उससे हमें समझ में आता है कि क्या सही है और क्या गलत।

गलत करके कैसे जी सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : अब गलत काम बंद न हो तो, उसके लिए क्या करें?

दादाश्री : उस गलत काम को बंद करना आना चाहिए न? वह गलत काम करना सीखे कहाँ से? क्या किसी ने सिखाया?

प्रश्नकर्ता : दुनियादारी सिखाती है कि गलत बोलो, गलत करो। पैसे कमाने के लिए सिखाते हैं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वह हमें सीखना हो तो सीखें, न सिखना हो तो नहीं सिखाएँगे।

प्रश्नकर्ता : बिज़नेस में गलत काम करते हों, तो उसमें से छूटने का रास्ता क्या है?

दादाश्री : लेकिन गलत करते ही क्यों हो? यह सीखे ही कहाँ से? दूसरा कोई अच्छा सिखाए वहाँ

से अच्छा सीख लो। यह गलत काम करना किसी से सीखे हो इसीलिए तो गलत करना आता है, वर्ना गलत करना आता ही कैसे? अब गलत सीखना बंद कर दो और गलत कामों के सारे कागज़ जला दो!

प्रश्नकर्ता : तब तो व्यापार नहीं चलेगा, व्यापार ऐसा होता है कि गलत काम तो करना ही पड़ता है।

दादाश्री : व्यापार न चले तो आपको क्या नुकसान?

प्रश्नकर्ता : व्यापार न चले तो पैसे नहीं मिलेंगे और हमें दुनिया में रहना है।

दादाश्री : आपको यह कैसे पता है कि गलत काम नहीं करेंगे तो व्यापार नहीं चलेगा? इसका फोरकास्ट है आपके पास? फोरकास्ट के बिना आप कैसे कह सकते हो कि आपका नहीं चलेगा? इसलिए कुछ दिन, यह जो गलत कर रहे हो, उससे उल्टा तो करो। करके तो देखो, तब पता चलेगा कि व्यापार पर क्या असर होता है! कोई ग्राहक आए और पूछे कि 'इसकी क्या कीमत है?' तब कहना कि, 'ढाई रुपये'। फिर वह पूछे कि, 'साहब, इसकी सही कीमत क्या है?' तब आपको सच बताना चाहिए कि, 'बाज़ार में यह लेने जाऊँ तो इसकी सही कीमत पौने दो रुपये होगी।' ऐसा एक बार कहकर तो देखो! फिर क्या होता है वह देखो।

प्रश्नकर्ता : फिर तो हम से कोई सामान ही नहीं खरीदेगा।

दादाश्री : वह लेगा या नहीं लेगा इसका आपको कैसे पता चला? आपको फोरकास्ट हुआ हो, जैसे खुद को भविष्य का दिखता हो, ऐसा करते हैं न लोग? वह नहीं लेगा तो कोई दूसरा ले जाएगा, वर्ना कोई तीसरा तो लेने वाला मिलेगा न?

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

राजस्थान

उदयपुर **दिनांक : 20 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9414538411
स्थल : 16 A, जवाहर नगर, पटेल सर्कल, उदयपुर सीटी रेलवे स्टेशन लिंक रोड, उदयपुर।

चितौड़गढ़ **दिनांक : 21 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9829749481
स्थल : 69,70, बालाजी नगर, आईटेक आई.टी.आई. चमत्कारी सांवरिया जी मंदिर से आगे, सेन्ती, चितौड़गढ़।

अजमेर **दिनांक : 22 अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9460611890
स्थल : स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

जैतारण **दिनांक : 23 अप्रैल** **समय :** शाम 8 से 10 **संपर्क :** 9413172239
स्थल : गाँव - उदावतो की पोल, लौटोती, जैतारण।

जोधपुर **दिनांक : 24 अप्रैल** **समय :** सुबह 11 से 1 **संपर्क :** 9828360301
स्थल : ईन्द्र योगा संस्थान, **E-30** सेक्टर-**E,** शास्त्री नगर, जोधरपुर।

पाली **दिनांक : 25 अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9252065202
स्थल : स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

हैदराबाद

23 अप्रैल (शनि), शाम 6 से 9 – **सत्संग और 24 अप्रैल** (रवि), शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

स्थल : श्री हनुमान व्यायामशाला स्टेडियम, सुल्तान बाजार, हैदराबाद. **संपर्क :** 9393052836

25 अप्रैल (सोम), शाम 6 से 9 – **सत्संग**

स्थल : बिरला साइंस म्यूजियम, आदर्श नगर, हैदराबाद. **संपर्क :** 9393052836

अडालज त्रिमंदिर

14 मई (शनि), शाम 5-30 से 8 – **सत्संग**

15 मई (रवि), शाम 4-30 से 8 – **ज्ञानविधि**

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर – वर्ष 2022

8 से 12 मई – सत्संग शिविर

9 मई – पूज्यश्री के जन्मदिन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 1 मई 2022 है। अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप द्वारा दी जाएगी।

हिन्दी सत्संग शिविर – वर्ष 2022

18 मई (बुध),	सुबह 10-30 से 12	– **आप्तपुत्र सत्संग**
	शाम 4-30 से 7	– **सत्संग-गर्वरस (दादावाणी सितम्बर '16 और आप्तवाणी-9)**
19 मई (गुरु),	सुबह 10-30 से 12	– **मुमुक्षुओं के लिए पूज्यश्री सत्संग**
	शाम 5 से 8-30	– **ज्ञानविधि**
20 मई (शुक्र),	सुबह 10-30 से 12	– **सत्संग – माता-पिता और बच्चों का व्यवहार**
	शाम 5-30 से 7	– **सत्संग पारायण (पैसों का व्यवहार पुस्तक)**
21 मई (शनि),	सुबह 10-30 से 12	– **पूज्यश्री द्वारा विशेष सत्संग (WMHT - बहनों के लिए)**
	शाम 5-30 से 7	– **पूज्यश्री द्वारा विशेष सत्संग (MMHT - भाईओं के लिए)**
22 मई (रवि),	सुबह 10-30 से 12-30	– **पूज्यश्री के दर्शन**
	शाम 5 से 7	– **प्रश्नोत्तरी सत्संग**

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। इस शिविर में भाग लेने के लिए अपना रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 8 मई 2022 है। **Akonnect** ऐप द्वारा आप अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। यदि आपके शहर में कोई सेन्टर नहीं है तो हेल्पलाईन नंबर 9924348880 या 079-35002120 पर संपर्क करें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

मेहसाणा - अडालज : पूज्यश्री का 52 वाँ ज्ञान दिन : 6 मार्च

आशीर्वाद लेते पूज्यश्री

ऐक्टिविटी

समाधि के दर्शन

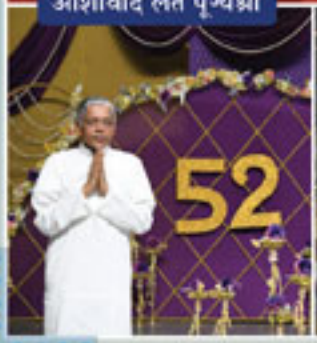

सत्संग

वडोदरा : सत्संग - ज्ञानविधि : 12 - 13 मार्च

स्वागत

सेवार्थी सत्संग

अप्रैल 2022
वर्ष-17 अंक-6
अखंड क्रमांक - 198

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

मेन प्रोडक्शन, ज्ञानी पुरुष से आत्मा प्राप्त करना वह

इस काल के लोगों को तो, अभी कहाँ से सामान ले आऊँ, किस तरह दूसरों का हड़प लूँ, किस तरह मिलावटी सामान बेचना, अणहक्क (बिना हक्क का) के विषयों को भोगना और इसमें से फुरसत मिले तो दूसरा कुछ खोज सकेंगे न? इससे सुख कहीं बढ़ नहीं गए। सुख तो कब कहलाता है? जब मेन प्रोडक्शन (आत्मा का) करे तब। यह संसार तो बाइ प्रोडक्ट है। पिछले जन्म में कुछ (पुण्य) किया होगा, उससे यह देह मिली है, भौतिक चीजें मिली हैं, पत्नी मिली, बंगला मिला। आज के लोगों में समझ बदल गई है, इसलिए ये बाइ प्रोडक्शन के कारखाने खोल लिए हैं। बाइ प्रोडक्शन का कारखाना नहीं खोलना चाहिए। मेन प्रोडक्शन यानी मोक्ष का साधन 'ज्ञानी पुरुष' से प्राप्त कर लेना चाहिए। फिर संसार का बाइ प्रोडक्शन तो अपने आप मुफ्त में आएगा ही। बाइ प्रोडक्शन के लिए तो दुर्ध्यान करके अनंत जन्म बिगाड़ लिए! एक बार मोक्ष पा ले तो तूफान खत्म होगा!

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.